हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

अगस्त, 2003 वर्ष 2 अंक 6

–: सम्पादक :–
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

– सहायक –
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2787250
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

जब तक़दीर का मुआ़मला आ जाता है तो तदबीर राएगाँ हो जाती है।

(ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

विषय एक नज़र में

दुख भरी लम्बी कहानी.....	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
दुरूदो सलाम	मौलाना मु० सानी हसनी	6
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अब्दुल हयी हसनी	6
मुसलमानों की कुछ धार्मिक विशेषताएं	मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी	7
मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि (स०)	मौ० स० मुहम्मद राबे हसनी	9
उत्तरी सीमा से मुसलमानों का दाख़िला	आमिना उसमानी	16
औरत की आज़ादी या गुलामी की ज़ंजीर	सादिका तस्नीम फ़ारूक़ी	21
आप की समस्याएं और उनका हल	मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी	23
मुस्लिम शासन के न्याय का विस्तार	डा० मु० इज्तिबा नदवी	25
मैं पशु पक्षी का नेता होता	डा० सूरज मृदुल	27
हुमायूं की धार्मिक सहनशीलता	स० सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	28
शहद आहार भी दवा भी	अफ़ज़ल नासिर खां	29
बच्चियों की तालीम व तरबियत	खैरुन्निसा 'बेहतर'	30
बच्चों में निमोनिया	डा० मुहम्मद असलम	32
इस्लाम में सदआचरण	मु० ज़फ़ीरुद्दीन मिफ्ताही	33
कुर्आन मजीद की समता	मौ० मुहम्मदुल हसनी	35
ताक़त समस्या का हल नहीं है	हैदर अली नदवी	36
उपदेश को खुदा के भुलाया न कीजिए	हैदर अली नदवी	37
माजराए दुख़्तरे ख़ैरुल अनाम	अल्लामा शिब्ली नोमानी	37
क़ुदरत के चमत्कार	हबीबुल्लाह आज़मी	38
गहरे सागर का संसार	मनीष त्रिपाठी	39
दुआ	तस्नीम हसनी	39
अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	मुईद अशरफ नदवी	40

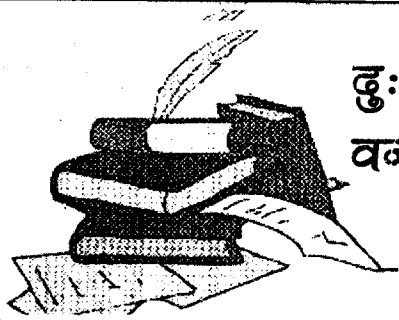

दुःख भरी लम्बी कहानी चुप कराती है मुझे। वर्ना मुंह में जीभ भी है बोलने की शक्ति भी।।

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

एक मित्र ने मुझ पर व्यंग (तंज़) करते हुए कहा कि बग़दाद के पतन पर आप ने कुछ न लिखा जब कि सभी पत्रकारों ने कुछ न कुछ लिखा। आप को चाहिए था कि अमरीका के अत्याचार के विरुद्ध कुछ लिखते। मैं ने उत्तर दिया कि बग़दाद के पतनपर मुझे बड़ा ही दुख हुआ। मुझे कई रोज़ तक ख़ाना पानी अच्छा न लगा उस बीच मेरे मुख पर मुस्कान न आ सकी। १.४.०३ को मैंने गद्य, पद्य के बीच निम्न लिखित पंक्तियां भी उर्दू भाषा में कही थीं।

काश कि इक राइफल कहीं से पाजाऊँ।
तये अर्ज़ करूँ और इराक़ पहुंच जाऊँ।।
खड़े हो के मैं मज़लूमों में सीना तानूँ।
ज़िन्दगी दे के जो जीते हैं वह जीना पाऊँ।।
मेरे अल्लाह दे तौफ़ीक तू जमने की।
लड़ के ज़ालिम से हक़ीक़ी राहत पाऊँ।।
मसलहत तेरी समझना मुझे मुश्किल है।
दुआ इतनी है कि लड़ता हुआ मारा जाऊँ।।
तेरे सिवा और नहीं कोई भी सुनने वाला।
रहूं ज़िन्दा कि मरूं तेरी मैं मर्ज़ी पाऊँ।।
न है लालच मुझे दौलत का न मन्सब का।
मैं हूं आसी मेरे मौला तेरी रहमत पाऊँ।।

तये अर्ज़ एक गुप्त ज्ञान है कहते हैं उस ज्ञान द्वारा विश्व के किसी भी कोने में तुरंत पहुंचा जा सकता है। यहां मैं ने उस ज्ञान की अभिलाषा की है वह ज्ञान मुझे प्राप्त नहीं है।

कई बार क़लम उठाया कि कुछ लिखूं परन्तु न जाने क्यों क़लम रुक गया। ख़याल आने लगता कि कौम की बद अमली का रोना रोऊँ कि अत्याचारियों के अत्याचार का क़िस्सा लिखूं। कौम की बे अमली तथा शासकों के भोग विलास की कहानी के दुख भरे विस्तार से चुप ही अच्छी है। उनके सुधार में आलिम लोग लगे हैं और लगे रहेंगे। रही बात अत्याचारियों की सामयिक सफलता की तो उनको तो दुन्या की खेती से कुछ मिलना ही है। उनको इस अल्पकालीन संसार का थोड़ा स्वाद दिया ही जाएगा इस लिये कि फिर तो उनको सदा जहन्नम में जलना है। नुमत्तिअुहुम् क़लीलन् सुम्म नज़तर्रूहुम् इला अज़ाबिन ग़लीज़० (३१–४४)

ज़मीन अल्लाह की है। वह जिसे चाहता है उस का मालिक बना देता है। वह किसी पर अत्याचार नहीं करता लोग स्वयं ही अपनी जानों पर अत्याचार कर लेते हैं। वह राज्य–स्वामी (मालिकुलमुल्क) है। जिसे चाहता है राज्य सिंहासन प्रदान करता है। जिसे चाहता है सिंहासन से उतार देता है। धन तथा सम्मान उसी के हाथ में हैं। राज पाट सम्मान का चिन्ह नहीं। सम्मान वह है जिसे अल्लाह सम्मान कहे, अपमान वह है जिसे अल्लाह अपमान बताए। जो जितना संयमी होगा अल्लाह को हर समय ध्यान में रखने वाला होगा। हर पग पर अल्लाह की प्रसन्नता तथा उसकी अप्रसन्नता को सामने रखेगा वह उतना ही सम्मान वाला होगा। हज़रत ज़करीया (अ०) आरे से चीर दिये गये। हज़रत उमर के छुरा भोंक दिया गया, हज़रत उसमान की गर्दन काट

दी गई हज़रत अ़ली पर तलवार चला दी गयी। हज़रत हमज़ा के टुकड़े कर दिये गये। हज़रत हुसैन का सिर तन से अलग कर दिया गया। देखने में उनका जीवन छीन कर उन को अपमानित किया गया परन्तु वास्तव में अल्लाह ने उनको सम्मान प्रदान किया। उनको शहीद के पद से प्रतिष्ठित किया। (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम)

उस अल्लाह ने खुलफा–ए–राशिदीन (रज़ि०) अमीर मुआ़विया (रज़ि०) उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह०) तथा हारूनुर्रशीद, सलाहुद्दीन अय्यूबी जैसे शासकों को राज्य के साथ सम्मान भी दिया और नम्रूद, फिरऔन, हामान, शददाद, क़ारून जैसों को राज्य तथा सांसारिक धन देकर भी तिरस्कृत किया उसके भेदों को वही जाने।

अल्लाह तआ़ला की उतारी हुई किताब और उसके अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत पर चलने वाले तालिबान को अम्रीका जैसे अत्याचारी द्वारा शासन से वंचित कर दिया गया। उसी अत्याचारी ने इराक़ के शासक सद्दाम को देश निकाला देकर इराक़ के तेल पर अधिकार जमा लिया। कुवैत तो पहले से ही उसका था। अब दूसरे तेल वाले इस्लामी देशों पर भी नज़र है।

क्या यह जो कुछ हुआ और हो रहा है अल्लाह की मर्ज़ी के बिना हुआ है? नहीं ऐसा नहीं हो सकता। फिर क्या यह सब हम मुलमानों के कुकर्मों के कारण हुआ तथा अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की अवज्ञा से हुआ? कहा जा सकता है कि हां यह तो शत प्रतिशत सत्य है। फिर प्रश्न होता है कि तालिबान तो शरीअ़त के पाबन्द थे। उनकी दीनदारी भी प्रसिद्ध थी और बहादुरी भी उनकी हुकूमत क्यों चली गई ? उत्तर यह है कि सम्भव है कि आ़म अफ़ग़ानों की बे दीनी के कारण अल्लाह के फैसले से दीनदारों को हटाकर उन पर अत्याचारी नियुक्त किये गये। वास्तविकता तो अल्लाह ही जानता है। हम देखते हैं कि हज़रत हुसैन (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लाडले नवासे थे, आप (स०) के सहाबी थे, जिनकी दीनदारी में कोई सन्देह नहीं कर सकता जब उनके शरीर में अत्याचारियों के तीर चुभ गये और उनकी गर्दन पर ज़ालिमों की तलवार चल गई तो तालिबान क्या हैं? यह सब अल्लाह के भेद हैं जिनको वही जानता है। हमारा कर्तव्य है कि हम कुर्आन के आदेश "फ़ला तमूतुन्न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून" (तुम इस्लाम के अतिरिक्त और किसी दशा पर जान न दो – २:१३२) पर अ़मल करने की जहां तक सम्भव हो कोशिश करें।

हमारी जान जाए या रहे। हमारा तख़्त जाए या रहे। हमारा धन जाए या रहे परन्तु हमारा ईमान हम से न छूटे। यह हमारी चेष्ठा भी हो और अल्लाह से दुआ भी । यह हमारी बड़ी सफलता होगी और वास्तविक सफलता यही है। रही मुस्लिम रियासतों की सुरक्षा तो जब तक सारी रियासतें एक जुट होकर अत्याचारी का सामना न करेंगी तब तक वह सुरक्षित रह न सकेंगी। आज इराक़ गया कल शाम जाएगा, अरदुन जाएगा और पता नहीं यह सिलसिला कहां और कब टूटेगा, परन्तु अत्याचारियों ने इस्लामी रियासतों पर अपनी चालों का ऐसा जाल बिछा रखा है कि इन रियासतें में एकता दुर्लभ ही लगती है। यह भी अल्लाह का भेद है जिसे वही जानता है।

इस पर भी हमारे मुस्लिम शासकों का इस्लाम से जो सम्बन्ध है वह चिंतनीय है। उनका सम्बन्ध मुसलमानों से जितना है इस्लाम से उससे कहीं कम फिर कुछ लोगों को कौमियत के भूत ने इस्लाम से दूर फेंक दिया है। वह शासक बाक़ी रहें तो इस्लाम को हानि पहुंचे उनका राज्य चला जाए तो इस्लाम और मुसलमान दोनों की हानि देश के सच्चे मुसलमान भी मुस्लिम राज्य के लाभों से वंचित। अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि वह मिल्लत को क्षमा करे और अपनी व्यापक कृपा से हमारा सुधार करे।

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

आम मुसलमानों के साथ बरताव–मोमिन तो परस्पर भाई–भाई हैं। (सूरः–ए–हुजुरात ४९:१०)

हर मुसलमान का एक दूसरे से एक बहुत बड़ा सम्बन्ध (रिश्ता) है। वह रिश्ता दीन का है। कैसा ही बड़े से बड़ा क़ाफ़िर और सख़्त से सख़्त हो जिस वक़्त वह खुदा और उसके रसूल (स०) पर ईमान लाया वह हमारा मज़हबी (धर्मी) भाई बन गया। पवित्र क़ुर्आन में हैः

सो यदि यह काफ़िर तौबा करलें और नमाज़ काइम (स्थापित) करें और ज़कात अदा करें तो वह तुम्हारे मज़हबी भाई हैं। (९:११)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया सारे मुसलमान मिल कर एक आदमी के समान हैं कि यदि उस की आंख भी दुखे तो सारा बदन दुखी हो जाता है और अगर सर में दर्द हो तो पूरा शरीर कष्ट में होता है।

मतलब यह है कि यही हाल मुसलमानों का भी होना चाहिए कि उनमें से एक को भी कष्ट पहुंचे तो सारे मुसलमान कष्ट का अनुभव (महसूस) करें।

फ़रमाया : हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। न उस पर अत्याचार करे न उसको बे सहारा छोड़े न उसको अपमानित करे। आदमी के लिए यह बुराई क्या कम है कि वह अपने मुसलमान भाई को अपमानित करे। मुसलमान की हर वस्तु दूसरे पर हराम है। उस का खून, उसका माल उसकी आबरू। अर्थात न तो कोई मुसलमान किसी मुसलमान को नाहक़ क़त्ल करे न उसका माल बिना हक़ खाए अपने भाई की आबरू पर हमला करना अवैध है हराम है।

फ़रमाया : किसी मुसलमान के लिए जाइज़ नहीं कि वह तीन दिनों से ज़ियादा अपने भाई को छोड़ दे, मुलाक़ात हो तो वह उधर मुंह फेर ले और यह इधर मुंह फेर ले, इन दोनों में अच्छा वह है जो सलाम करने में पहिल करे। फरमाया : हर मुसलमान पर उसके मुसलमान भाई के पांच हक़ हैं :

सलाम का जवाब देना। उसके छीकंने पर (अगर वह अल्हमदुलिल्लाहि कहे तो) यरहमुकल्लाहु अर्थात अल्लाह तुम पर कृपा करे कहना। उसकी दअ़वत (निमंत्रण) क़बूल करना। बीमार हो तो हाल पूछने जाना। देहांत हो जाए तो उसके जनाज़े में जाना।

फ़रमाया : जो कोई क़सम खा कर किसी मुसलमान का हक़ मारेगा तो अल्लाह तआ़ला उसके लिए दोज़ख वाजिब और जन्नत हराम करेगा।

इन सब बातों का सारांश यह है कि जिस प्रकार आदमी अपनी जान, माल, इज्ज़त और नफ़े का ख़याल रखता है उसी प्रकार दूसरे मुसलमान के लिए भी ख़याल रखना चाहिए।

दुरूदो सलाम

मौ० मुहम्मद सानी हसनी

गालियां जिस ने दीं, उसको तुहफ़े दिये
ज़ख़्म जिस के लगे, ज़ख़्म उसके सिये
आफ़ियत की दुआ मांगी सबके लिए
की जफ़ा जिस ने बदले वफ़ा से दिये
जिस ने सब को पिलाया महब्बत का जाम
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

वह ख़ुदा का नबी ख़ातिमुल मुर्सलीं
मतलअ़े नूर थी जिस की प्यारी जबीं
ज़ात ऐसी मिलेगी बताओ कहीं
हो जो इतनी अ़ज़ीमो वजीहो हसीं
जिसकी हर बज़्म, जिके सुबू जिस के जाम
उस पे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

जिसपे जानें फ़िदा जिस पे कुर्बान दिल
आसमानों ज़मी, रंगो बू, आबो गिल
रह गया मिट के वह, हो गया जो मुख़िल
कुफ़्र भी सरनिगूं, शिर्क भी है ख़जिल
ख़ाके पा के बराबर ख़वासो अ़वाम,
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

जिसकी आदम से पहले थे घर घर सनम
मर्कज़े शिर्क सारा बना था हरम
रख दिये शिर्क पर अपने दोनों कदम
जिसकी अ़ज़मत के शाहिद हैं लौहो क़लम
जिसका दोनों जहां में है अअ़ला मक़ाम
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

दौलत की ज़ियादती का नुक़सान :

१२६. हज़रत अबू सईद खुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया कि माल में बड़ी कोशिश और मिठास है, मौसमें बहार में, जो सब्ज़ा उगता है। (वह ऐसा स्वादिष्ट होता है कि) उसको जानवर इतना खा जाता है, कि पेट फूल आता है, और वह या तो मर जाता है, या मरने के क़रीब हो जाता है, सिवाए उस जानवर के जो खाता है, फिर जब पेट भर जाता है, तो वह धूप खाता है, जुगाली करता है, और पाखाना पेशाब करता है और फिर वह दोबारह खाता है (इससे उसको नुक़सान नहीं पहुंचता) यह माल भी बड़ा मीठा, है जो इसको जाइज़ तरीक़े से हासिल करता है, और सही जगह में खर्च करता है, तो उसके लिए क्या ही अच्छा रिज्क़ है और जो इसे ग़लत तरीक़े से हासिल करता है उसकी मिसाल उस शख़्स की तरह होती है जो खाता जाता है और पेट नहीं भरता।

(बुख़ारी)

रिज़्क़ की तलाश में परहेज़गारी—

१३२. हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया ऐ लोगो! ख़ुदा से डरो, और रिज़्क़ की तलाश के सिलसिले में नेकी और परहेज़गारी का तरीक़ा अपनाओ और जो हलाल व जाइज़ है उसको अपनाओ, और जो हराम व नाजाइज़ है उसको छोड़ दो (इब्ने माजा)

ग़नी वह है जो दिल का ग़नी हो —

१३३. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया, कि दौलत व इस्तिग़ना माल की कसरत से नहीं होता, बल्कि मालदारी दिल की दौलत है।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

ख़ुदा और मख़लूक़ की मुहब्बत का नुस्खा —

१३३. हज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया दुन्या के बारे में एहतियात करो अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगे और जो लोगों के पास है उसका लालच न करो लोग तुम से मुहब्बत करने लगेंगे।

(इब्ने माजा)

लोगों की गुर्बत का नबी करीम सल्ल० पर खास असर —

१३८. हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) से रिवायत है कि हम लोग दिन के शुरू हिस्सा में हुजूर (सल्ल०) की खिदमत में थे कि कुछ लोग धारीदार चादरें बीच में काट कर गले में डाले हुए या कुर्ता पहने हुए तलवार लटकाए हुजूर की खिदमत में हाज़िर हुए, उनमें से अकसर क़बील—ए—मुज़िर के लोग थे, उन पर फ़क्र व फाका का असर देख कर हुजूर (सल्ल०) के चेहरे का रंग बदल गया, आप अन्दर तशरीफ ले गये, फिर बाहर आये, हज़रत बिलाल (रज़ि०) को अज़ान का हुक्म फ़रमाया, अज़ान व इक़ामत हुई और नमाज़ पढ़ी गई, नमाज़ के बाद आपने तक़रीर फ़रमाई और फ़रमाया लोगों तुम उस खुदा से डरो जिसने तुमको एक ही जान से पैदा किया है "बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हें देख रहा है" तक (पढ़ा) फिर सूरः हश्र की आयत (ऐ ईमान वालो खुदा से डरो, और हर एक देखो कि उसने कल, क़ियामत के लिए क्या तैयारी की है?) पढ़ी, उसके बाद लोगों ने रूपया पैसा कपड़ा ख़ैरात किया, कोई एक साअ़ (पैमाना) गेहूं लाया कोई एक साअ़ खजूर ही लाया, यहां तक कि हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया, लाओ चाहे खजूर का एक टुकड़ा ही क्यों न हो, अन्सार में से एक शख्स भरी हुई बोरी ले कर आये जिस का उठाना और संभालना मुश्किल हो रहा था बल्कि हाथ जवाब दे गये, फिर तो देने वालों का तांता बंध गया। यहां तक कि मैंने गल्ला और कपड़े के दो ढेर देखे, फिर मैंने देखा कि हुजूर (सल्ल०) का चेहरा मुबारक दमक रहा है चेहरे पर ख़ुशी व बशाशत खिल रही है फिर आप ने फरमाया जिसने इस्लाम में कोई अच्छा तरीक़ा राएज किया, उसको उसका अज्र तो मिलेगा, ही उसके बाद जो लोग उस पर अमल करेंगे, उसका भी अज्र उस शख्स को मिलेगा और उनके अज्र में कोई कमी न होगी और जिस ने इस्लाम में बुरा तरीक़ा राएज किया उसका भी वबाल होगा, दूसरे जो लोग उसको अपनाएंगे उसका भी वबाल उसको होगा। उनके वबाल में

(शेष पृष्ठ १५ पर)

मुसलमानों की कुछ धार्मिक विशेषताएं

मौ० सैयद अबुल हसन अली नदवी

१. एक निश्चित विश्वास और शरीअ़त

दुन्या के तमाम मुसलमानों की पहली विशेषता यह है कि उनके अस्तित्व की बुन्याद एक निश्चित विश्वास और शरीअ़त पर है। जिसको संक्षेप में मज़हब कहते हैं। उनकी मिल्लत का नाम और विश्वव्यापी पदवी किसी नस्ल, ख़ानदान, धार्मिक नेता, धर्म के संस्थापक और देश के बजाय एक ऐसे शब्द से लिया गया है जो एक निश्चित विश्वास को व्यक्त करता है। दुन्या की मज़हबी क़ौमें प्रायः अपने–अपने धार्मिक नेताओं, संस्थापकों, पैग़म्बरों, मुल्कों के नाम से लिये गये हैं जैसे यहूदी, यहूद और बनी इस्राईल कहलाते हैं। यहूद हज़रत याकूब के बेटों में से एक बेटे का नाम और इस्राईल स्वयं हज़रत याकूब का नाम है। ईसाई पैग़म्बर ईसा के नाम से जुड़ा है, कुरआन में इन्हें 'नसारा' के नाम से भी याद किया गया है, नासिरा पैग़म्बर मसीह के वतन का नाम है। मजूसियों के धर्मावलम्बियों का जिन को आमतौर पर हिन्दुस्तान में पारसी कहा जाता है, सहीह नाम ज़ोरास्ट्रियन अथवा "ज़रतशती" है जो इस धर्म के संस्थापक "ज़रतश्त" से लिया गया है। "बौद्धमत' अपने संस्थापक 'गौतमबुद्ध' से बना है।

मुसलमान कुरआन और धार्मिक व साहित्य की किताबों में "मुस्लिमून" और "उम्मते मुस्लिमा" के नाम से जाने पहचाने जाते हैं। "मुस्लिम" शब्द "इस्लाम" की ओर निस्बत है। मुसलमानों की निस्बत शब्द "इस्लाम" की तरफ़ है। "मुस्लिम" का अर्थ है ख़ुदा की बादशाही के सामने अपने हवाले कर देना, सरेन्डर कर देना। यह एक निश्चित संकल्प, एक निर्धारित रवैया, जीवन–डगर है। वह अपने पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद से गहरा सम्बन्ध और घनिष्ठ लगाव रखने के बावजूद एक क़ौम की हैसियत से मोहम्मदी नहीं कहलाते। हिन्दुस्तान में पहली बार अंग्रेजों ने उनको "मोहम्मडन्स" और उनके कानून को "मोहम्मडन लॉ" का नाम दिया, लेकिन उन लोगों ने जो इस्लाम की स्प्रिट से वाकिफ़ और उसके जानकार थे, इस पर आपत्ति की, और अपने लिए उसी पुराने लक़ब (उपनाम) "मुस्लिम" को प्राथमिकता दी, और उन संस्थाओं को जिनका नाम अंग्रेजों के प्रारम्भिक शासन काल में मोहम्मडन कालेज या मोहम्मडन कान्फ्रेंस पड़ गया था, मुस्लिम से बदल दिया।

अ़क़ीदा (विश्वास और आस्था) और शरीअ़त मुसलमानों के पूरी जीवन व्यवस्था, सभ्यता, व समाज में बुनयादी महत्व रखते हैं और वे स्वाभाविक रूप से इनके मुआ़मले में असाधारण रूप से संवेदनशील (सेन्सेटिव) होते हैं। उनकी व्यक्तिगत और सामूहिक समस्याओं पर विचार करने तथा कानून बनाने यहां तक कि सामाजिक और नैतिक मुआ़मलों में इस बुनयादी तथ्य को सामने रखने की जरूरत है। यह बात भी ध्यान में रखने की है कि उनके पर्सनल लॉ का अस्ल और बुनयादी हिस्सा कुरआन से उद्धृत है और उसकी विवेचना हदीस व फ़िक्ह की किताबों में की गई है।

मुस्लिम पर्सनल ला मुसलमानों की शरीअ़त व मज़हब का हिस्सा है और कुरआन व हदीस से साबित है किसी सामाजिक प्रयोग अथवा सामाजिक विज्ञान के अध्ययन अथवा बुद्धिजीवी वर्ग, कानून बनाने वालों और समाज सुधारकों की देन नहीं है, इसलिए कोई मुसलमान हुकूमत भी इसमें संशोधन नहीं कर सकती, वह इसलिए भी मज़हब का हिस्सा है और उसे व्यवहार में लाना हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि इस्लाम में मज़हब का दाइरा धर्म की परिधि विश्वास व उपासना तक सीमित नहीं, वह पारस्परिक सम्बन्धों, कर्तव्य–अधिकार और सभ्यता व समाज पर हावी है, इसलिए और भी कि यदि मज़हब को सभ्यता व समाज से और सभ्यता व समाज को मज़हब से अलग कर दिया जाये तो मज़हब बेअसर, सीमित और कमज़ोर और सभ्यता व समाज बे नकेल का ऊंट बन जाते हैं और स्वार्थ तथा कामना उन पर हावी हो जाते हैं।

इनमें से कुछ अंश कुरआन में इतना स्पष्ट आया है या उस को निरन्तर इस प्रकार व्यवहार में लाया जाता रहा है और उस पर मुस्लिम विद्वानों का ऐसा मतैक्य रहा है कि उस का इन्कार करने वाला अब कानून के लिहाज़ से इस्लाम के दायरे से खारिज समझा

जायेगा। भले ही उसकी विवेचना और व्यवहारिकता में कितना ही ज़माने का लिहाज़ किया जाये, इसमें संशोधन, परिवर्तन अथवा परिवर्धन का प्रश्न ही नहीं उठता। इस मुआमले में किसी मुस्लिम बाहुल्य देश की निर्वाचित सरकार और विधायिका को भी किसी परिवर्तन का अधिकार नहीं; और मान लो यदि ऐसा किया गया अथवा करने का इरादा है तो यह एक काट—छांट और धर्म में हस्तक्षेप का पर्याय है।

अलबत्ता जो मसाइल इज्तिहादी हैं, और जिन में समय के परिवर्तन के साथ बराबर लचक पैदा की जाती रही है और उनको, मुस्लिम विद्वान और फ़िक़्ह के माहिर जो इस के लिए सक्षम हैं अपने इरादा और इख़्तियार और आवश्यक विचार—विमर्श के बाद, नई परिस्थितियों की रिआयत करते हुए, समय और व्यावहारिक जीवन के अनुरूप बना सकते हैं। यह प्रकिया इस्लाम के इतिहास में हर युग में जारी रही है, और मुसलमानों की अन्तिम पीढ़ी तक ज़रूरी है।

२. पवित्रता (तहारत) की विशिष्ट परिकल्पना और व्यवस्था

स्वच्छता क्लीनलिनेस और पवित्रता में अन्तर है। स्वच्छता का अर्थ है कि शरीर पर मैल कुचैल न हो, कपड़े साफ़—सुथरे हों। पवित्रता का अर्थ यह है कि शरीर या कपड़ों में पेशाब, पख़ाना (मल—मूत्र) या ऐसी गन्दी चीज़ें जैसे शराब की बूंद, खून, कुत्ते की राल आदि पशुओं का गोबर अथवा चिड़ियों की बीट आदि नहीं लगी हो। अब यदि शरीर अथवा कपड़े पर एक छींट भी लग जाये, या रक्त की कोई बूंद, या गोबर, बीट आदि लगी हो तो शरीर कितना ही साफ़ और कपड़े कितने ही उजले हों मुसलमान पवित्र (ताहिर) नहीं होगा और इस शरीर और कपड़े के साथ नमाज़ नहीं पढ़ सकेगा। इसी प्रकार यदि उसने पेशाब और पाखाने के बाद — इस्तिन्जा नहीं किया है, या उसे नहाने (स्नान) की ज़रूरत है तो वह नजिस (अपवित्र) है नमाज़ नहीं पढ़ सकता।

यही हुक्म बर्तनों, फ़र्श और ज़मीन का है कि यह ज़रूरी नहीं है कि अगर वह साफ़ सुथरे और बेदाग़ हों तो वह ताहिर (पवित्र) भी हों, इन चीजों के लग जाने से जिन का उल्लेख ऊपर आया है, इनमें से कोई चीज़ पाक किये बिना पवित्र नहीं होगी और वह प्रयोग के योग्य नहीं बनेगी।

३. तीसरी विशेषता आहार की व्यवस्था

मुसलमान खाने पीने और पशुओं व पक्षियों के मांस के प्रयोग में आज़ाद नहीं हैं कि वे जो चाहें खाएं पियें। उनके लिए कुरआन और शरीअत में हलाल व हराम, अवर्जित व वर्जित के बीच एक लकीर खींच दी गई है, वह इसका उलंघन नहीं कर सकते। पशुओं और पक्षियों के बारे में वह इसके पाबन्द हैं कि उनको बिना शरई तरीक़े पर जबह किये और ज़बह के समय अल्लाह का नाम लिए बिना उसका प्रयोग नहीं कर सकते। अगर कोई जानवर शरई तरीकों पर ज़बह नहीं हुआ या शिकार में किसी चिड़िया को हलाल करने की नौबत नहीं आई तो वह उनके लिए मुर्दार का हुक्म रखती है। इसी प्रकार अगर जानवर को ज़बह किया जाये लेकिन ग़ैरुल्लाह की नीयत से हो या उस पर ग़ैरुल्लाह का नाम लिया जाये भले ही वह कोई देवी देवता या बुत हो, अथवा कोई पैगम्बर या शहीद तो वह भी मुर्दार की हैसियत रखता है और उसका खाना जायज़ नहीं। जानवरों में सुअर और कुत्ता हमेशा हराम और नजिस (अपवित्र) हैं। कुछ जानवरों का खाना मनअ़ और मांस हराम है हालांकि वह अपनी जात से नजिस नहीं जैसे शेर, तेन्दुआ, चीता आदि। इसी प्रकार कुछ पक्षी उनके लिए हलाल हैं, और कुछ हराम, जैसे शिकार करने वाले और पंजा से खाने वाले पक्षी, शिकरा, बाज़ आदि हराम हैं, और ग़ैर शिकारी चोंच से खाने वाले हलाल। वास्तव में यह इब्राहीमी सभ्यता की पहचान है और उन्हीं की पसन्द को मुसलमानों को चाहे वह दुन्या के किसी देश और इतिहास के युग के हों, इस का पाबन्द बना दिया गया है।

ज़ादे सफ़र
हदीस की अ़रबी किताब
रियाज़ुस्स्वालिहीन का
अनुवाद, द्वारा अमतुल्लाह
तसनीम साहिबा
उर्दू दो भागों में

प्रथम भाग .... ७५ रूपया
द्वितीय भाग .... ७५ रूपया

मकतब—ए—इस्लाम
५४/१७२ मुहम्मद अ़लीलैन
गोइन रोड लखनऊ—२२६०१८

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)

मौलाना सैयद मुह़म्मद राबे ह़सनी नदवी
अध्यक्ष मुस्लिम परसनल ला बोर्ड

इन्सानों को दुनिया में सही आचरण पर चलाने के लिए, ऐसे उनका रब (पालनहार) स्वयं इन्सानों में से ऐसे व्यक्तियों को नियुक्त करता रहा है जो उसके बताये हुए मार्ग को निःस्वार्थ भाव से साहस के साथ अन्जाम दे सके, हिदायत (सन्मार्ग) के इस महत्वपूर्ण काम के लिए सारे संसार के पालनहार की ओर से जो इन्सान नियुक्त हुए, वह नबी और रसूल के शब्द से याद किए जाते रहे, वह अपनी इच्छा शक्ति, बुद्धि और शारीरिक विशेषताओं में मुकम्मल और इन्सानों में बुलन्द खुसूसियात रखते थे। यह सिल्सिला इन्सानों के दादा हज़रत आदम (अलै०) से शुरू हो कर सय्यदना ह़ज़रत मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) तक क़ायम रहा, नबियों में उच्च कोटि की योग्यता देखी जाय, तो पैदाइश के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि (सल्ल०) के ज़ाहिर और अन्दुरून को अल्लाह तआ़ला ने सब इन्सानों के मामला में बेहतर और मुकम्मल बनाया, और उसके लिए आप (सल्ल०) को ज़िन्दगी के विभिन्न दौर से गुज़ारा, जो इन्सानों में विभिन्न ह़ालात को झेलने और सन्तुलित राह निकालने के लिए मददगार होते हैं, पहले आपको यतीम (अनाथ) पैदा किया गया, पैदा होने के बद जब आप होशमन्द हुए तो देखा कि आप (सल्ल०) के वालिद का साया हासिल नहीं, जबकि सैकड़ों आप के उम्र के बच्चों को हासिल है। यह बात एक मासूम बच्चे के दिल व दिमाग के लिए एक बोझ हुआ करता है फिर यह कि छः साल की उमर में ही मां का भी साया उठ गया, और फिर ८ साल की उम्र में दादा भी न रहे, इन महरूमियों को बच्चा भले तरीक़े से न झेल सके तो उसकी ज़िन्दगी की राह पेचीदा हो जाती है, और ज़िन्दगी में उसकी कामियाबी की राहें छुप जाती हैं। लेकिन इस बोझ को हिम्मत से वह झेल ले, तो उसकी ज़िन्दगी में मुश्किलों का झेलना आसान हो जाता है।

अल्लाह तआ़ला ने यह हिम्मत विशेष रूप से दी, जिसकी बिना पर आप (सल्ल०) में हालात और वाक़िआ़त को बेहतर तरीक़े से महसूस करने, और ज़िन्दगी के चैलेंजों का बेहतर ढंग से मुकाबला करने की समझ और हिम्मत पैदा हुई, और जल्द ही आप (सल्ल०) ने इज्ज़त वाली ज़िन्दगी की राह अपनाई और आप के अन्दर दुनिया में फैली हुई निशानियों के समझने का शौक पैदा हुआ।

अतः आप (सल्ल०) नुबूवत मिलने से पहले ही शहर की आबादी से निकल जाते, और आबादी से अलग एक ग़ार में कुछ वक़्त गुज़ारा करते, आप (सल्ल०) का तन्हाई में कुछ वक़्त गुज़ारने का जज़्बा वास्तविकता की खोज और उसके सिल्सिले में सोच विचार के लिए रहा होगा, इन्हीं जैसे एहसास के नतीजे में था, फिर चूंकि दुनिया ने अरबों और गैर अरबों के हक़ और ख़ुदा के बन्दगी की सही राह से भटक जाने को देखते हुए उनकी हिदायत के लिए आप (सल्ल०) को नियुक्त करना तय किया। इस लिए परोक्ष से वह इशारे आने लगे और नुबूवत मिलने से पहले ही पेड़ और पत्थर से अल्लाह के नबी के नाम से पुकारने की आवाजें आने लगीं जिनको सुनकर हुज़ूर (सल्ल०) आश्चर्य से मुतवज्जेह हो जाया करते, लेकिन पुकारने वाला कोई नज़र न आता कानो को इन आवाजों को सुनवाने के बाद हज़रत जिब्रईल (अलै०) इन आवाज़ों की हक़ीक़त को लेकर आपके पास, आपके एकान्त की जगह ग़ारे हिरा पहुंचे, और नुबूवत का पैग़ाम पहुंचाया फिर वक़्त के कुछ अन्तर से, अपनी अस्ली सूरत में भी उफ़ुक़ (नक्षत्र) पर ज़ाहिर हुए, ताकि दिमाग़ के किसी कोने में पैगाम–ए–ख़ुदावन्दी के लाने वाले इस फ़रिश्ता को न पहचानने में कोई शंका न रह जाए।

इस प्रकार आप (सल्ल०) पर नुबूवत व रिसालत का वह भारी बोझ डाला गया जो विषालता के लिहाज़ से दूसरे तमाम नबियों पर नहीं डाला गया था, जिसको आप (सल्ल०) के दिल व दिमाग़ ने इस भारी ज़िम्मेदारी को महसूस किया, और आप ने अपनी बुद्धिमय पत्नी से भी इस घटना का और इसके भारी बोझ को महसूस करने का ज़िक्र किया, उन्होंने तसल्ली दी और आप (सल्ल०) का उच्च कोटि के

मानवता से सम्बन्धित गुणों के माध्यम से इसको एक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी क़रार दिया और अधिक शांति के लिए हज़रत ईसा (अलै०) की शिक्षा से आगाह किया और अपने भाई वरक़ा बिन नौफ़ल से जाकर तस्दीक़ कराई अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को इस भारी बोझ, अर्थात दीन के प्रचार व प्रसार की कटीली झाड़ियो में चलने को, हिम्मत के साथ स्वीकार किया, आपने छोटी उम्र से ही ज़िन्दगी की कंटीली राहों को तय किया था

बाप की ओर से यतीमी के दौर से आप को पैदाइश से पहले ही निपटना पड़ा था, फिर मां की ओर से यतीमी, फिर क़रीबी मेहरबान दादा की भी ८ साल की उम्र तक पहुंचने पर जुदाई हो गई, लेकिन अल्लाह तआ़ला की नज़र–ए–करम रही और उसने शफीक चचा दिये, जिनको हमदर्दी से उम्र के पुख्ता हो जाने की आयु तक मदद हासिल रही, और जो नुबूवत मिलने के बाद नुबूवत के काम में अपनों की दुश्मनी और तकलीफ से बचाने में बेहद सहायक रहे। उसी के साथ–साथ आपको अल्लाह के फ़ज्ल से एक बड़ी समझदार और हिम्मत व हमदर्दी वाली पत्नी भी मिलीं जो आप की परेशानी में साथ देती रहीं।

लेकिन रब्बुल आ़लमीन ने दोनों की ओर से, हमदर्दी हासिल करने के दौर को भी, ज्यादह दिनों तक बाक़ी नहीं रखा, ताकि अल्लाह की मदद पर भरोसा करते हुए अब आप सल्ल० अपने रब की देखरेख में ही समस्याएं हल करें जिसने यह ज़िम्मेदारी डाली है उस की ओर से मदद होती रहेगी लेकिन सब्र व हिम्मत और तन्हा अपने रब पर भरोसे का सुबूत देना होगा।

अतः आप ने दअ़वत के काम की झाड़दार राहों पर चलते हुए नुबूव्वत की ज़िम्मेदारियों की अदायगी में केवल दस साल गुज़रे थे, कि दोनों हमदर्दाना मदद के सहारे भी खत्म हो गये, सख्त आज़माइश के कई मौक़ों पर आप की बर्दाश्त क्षमता उच्च कोटि की ज़ाहिर हुई। और अगर न ज़ाहिर हुई होती तो शायद बर्दाश्त से बाहर हो जाता, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने आपको नुबूव्वत के उस भारी उहदे पर क़ायम किया, जिसने मुश्किल से मुश्किल हालात का अच्छे ढंग से मुकाबला करने की ताक़त दी थी, इस लिए मक्का के काफ़िर आप (सल्ल०) को और मुसलमानों को इतनी तकलीफ पहुंचाते थे, कि बर्दाश्त से बाहर हो जाता था, यह आप (सल्ल०) की शिक्षा दीक्षा और सब्र के नतीजे में था। उनकी इस तकलीफ़ से कुछ की मौत तक हो गई, विशेषरूप से जो लोग कुरैशी खान्दान के न होते या गुलाम होते तो उनको बहुत ज्यादा तकलीफ़ें बर्दाश्त करनी पड़ती थीं, जैसे हज़रत बिलाल (रज़ि०) के सिल्सिले में आया है कि गर्म–पत्थर पर लिटाये जाते थे। और गर्म पत्थर से उनके जिस्म को दाग़ा जाता था कि वह, वह न कहें, जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० कहते हैं लेकिन वह "अहद, अहद" अर्थात अल्लाह तो एक ही है अल्लाह तो एक ही है कहते, और तौहीद के अक़ीदे से बिल्कुल किसी भी तरह हटने को तैयार न होते ।

यासिर (रज़ि०) के खानदान को तो इतनी तकलीफ़ दी जाती कि लोगों को देखना मुश्किल हो जाता, हुज़ूर (सल्ल०) का उनकी तरफ़ किसी वक्त गुज़र होता, तो आप (सल्ल०) फरमाते "ऐ यासिर के ख़ानदान वालों सब्र करो तुम को जन्नत मिलेगी।"

हज़रत यासिर (रज़ि०) साबित क़दम रहे, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हुक्म था, कि केवल बर्दाश्त करना है बदला नहीं लेना है उसी के साथ साथ हुज़ूर सल्ल० की नबवी तर्बियत व तअ़लीम और अखलाक़ व मुहब्बत आप के साथियों के लिए तकलीफ में सब्र व हिम्मत पैदा करती थी, शुरू इस्लाम से १३ साल तक की यह मुद्दत इस्लामी दअ़वत व ईमानी तर्बियत के साथ उसी सब्र की हालात में गुज़री।

एक बार एक सहाबी हुज़ूर (सल्ल०) से कहने लगे कि या रसूलल्लाह अब तो बर्दाश्त से ज्यादा हो गया है आप (सल्ल०) ने फरमाया अभी से तुम परेशान हो गये तुम से पहले की उम्मतों पर ऐसे–ऐसे हालात गुजरे कि उनके बदन लोहे की कंघियों से नोचे गये और उन्होंने सब्र किया, सब्र करो एक वक़्त ऐसा आएगा कि तुम ग़ालिब (प्रभावी) होगे। और ख़ुद हुज़ूर (सल्ल०) पर कभी गन्दगी डाल दी जाती थी कभी दूसरी क़िस्म की तकलीफ़ें पहुंचाई जाती थीं कभी रास्त में कांटे बिछाये जाते थे और एक बार अबू जहल जो आप का बड़ा विरोधी था आप के साथ बड़ी बुरी तरह से पेश आया, आप को बहुत तकलीफ़ हुई, लेकिन आपने कुछ नहीं किया। थोड़ी देर में आप के चचा हज़रत हमज़ः (रज़ि०) को मालूम हुआ वह उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे, लेकिन भतीजे के साथ बुरा बर्ताव सुन कर गुस्सा आ गया और जाकर अबू जहल को बुरा भला कहा और कहा कि हिम्मत

हो तो हमारे साथ करो जो करना हो और जोश में आकर मुसलमान हो गये और इस्लाम व मुसलमानों के मज़बूती का ज़रिया बने, और एक अवसर पर हज़रत उमर (रज़ि०) बिन खत्ताब जो उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे बल्कि वह अपने साथियों की तरह इस्लाम दुश्मन बने हुए थे, और ख़ानदान में सख्त दिल मशहूर थे। कहने सुनने में जोश में आ गये, और कहने लगे कि अभी जाकर मुहम्मद (सल्ल०) का काम तमाम कर देता हूं, ताकि क़िस्सा खत्म हो, अतः वह लोगों के कहने पर हुजूर (सल्ल०) को शहीद करने की नियत से निकले लेकिन रास्ते में अपनी बहन के घर से गुज़रे और उनसे उलझे और बहन को मारा भी, फिर शर्म आई और बात बनाने के लिए कहने लगे कि अच्छा वह कुर्आन दिखाओ जो मुहम्मद (सल्ल०) का है, उसको पढ़ने पर दिल पर असर पड़ा और उनकी प्रेरणा पर मुसलमन होने की नियत कर ली, और अपने बुरे इरादे से रूक गये।

अल्लाह तआला की ओर से इस्लाम के इस तेरह साल शुरूआती दौर में केवल सब्र करने का हुक्म था। फरमाया :

अनुवाद – "अपने हाथों को थामे रखो और नमाज़ कामय करो अर्थात अल्लाह की ओर ध्यान और दुआ, अिबादत से कुव्वत हासिल करो तकलीफ़ों को बर्दाश्त करो बदला न लो,"

अतः तमाम मुसलमानों ने इस हुक्म की पाबन्दी की और इस तरह अल्लाह तआला ने मुसलमानों के ईमान और अल्लाह की फ़रमाबर्दारी के रास्ते में हर तरह की कुर्बानी के जज़बे की तर्बियत हासिल कर ली, यह १३ सालादौर मुसलमानों के ईमान और हक़ के लिए हर तरह की कुर्बानी बर्दाश्त करने की तर्बियत का दौर था, और यह हक़ीकत में उनकी उस तर्बियत का दौर था, जिसके बाद उनको अपने दीन व ईमान के लिए किसी तरह की कुर्बानी देने में ज़रा सी भी कमज़ोरी बाक़ी नहीं रही, अल्लाह तआला की ओर से उन को ऐसी जमाअ़त (समूह) बनना था जो अल्लाह के लिए अपनी जान व माल कुर्बान करने में कोई झिझक न रखती हो, यह बात उस इम्तिहानी व तर्बियती दौर से गुज़रने पर मुस्लिम समाज को भलाई के साथ हासिल हो गई।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की मिसाल इस सिल्सिले में सबसे ज्यादह बुलन्द थी मक्का की ज़िन्दगी में इस्लामी दुश्मन का अस्ल निशाना वही रहे, आप (सल्ल०) बैतुल्लाह शरीफ़ में नमाज़ पढ़ने आते, और दुश्मनों की तरफ से गालियां सुनते, और नमाज़ पढ़ कर खामोशी से वापस चले जाते, जवाब न देते, आप (सल्ल०) के कंधों पर ओझड़ी भी डाल दी गयी जिसके प्रभाव से, सज्दः से उठना मुश्किल हो गया, बेटी हज़रत फातिमा (रज़ि०) को जब मालूम हुआ तो उन्होंने आकर इस गन्दगी को हटाया, रास्ते में कांटे बिछाए जाते, आप यह सब बर्दाश्त करते, आप की दो बेटियों को जो अबूलहब के बेटों की बीवियां थी अबूलहब ने अपने बेटों पर जोर डाल कर तलाक़ दिलवा दिया, और एक अवसर पर कुरैश के सब सरदार अबू तालिब के पास पहुंचे और उन से सख्त अन्दाज़ में कहा कि अपने भतीजे को रोकें वरना वह लोग कार्रवाई करेंगे, अबू तालिब परेशान हुए और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को बुलाया और कहा कि भतीजे! कौम के सरदार मेरे पास आये थे और तुम्हारे सिल्सिले में मना करने के लिए कह रहे थे, मैं बूढ़ा हो गया, मुखालिफ़त ज्यादह नहीं झेल सकता, मुझ पर रहम करो आप (सल्ल०) को दुख हुआ कि रिआयत और ख्याल करने वाले चचा भी आब हमदर्दी से मुंह मोड़ रहे हैं, आपको अपने चचा से भी हमदर्दी और बहुत दिनों से, मुहब्बत मिलने से, उनकी यह बात बहुत महसूस हुई, लेकिन दीन का मामला था, आपने फ़रमाया कि मैं इसको तो नहीं छोड़ सकता चाहे यह लोग सूरज व चांद तोड़ लाएं और मेरे हाथ पर रख दें, यह फ़रमा कर आप लौटने लगे, चचा की इस बात से आप की आंखों में आंसू आ गये, चचा ने देखा उनके दिल पर असर पड़ा तो आवाज़ दी, बुलाया, और कहा जाओ तुमको नहीं छोड़ूंगा चाहे यह लोग कुछ कहें, तुम अपना काम करते रहो, ऐसी मुहब्बत व हमदर्दी वाला चचा लेकिन जब अबू तालिब का इन्तिक़ाल होने लगा तो हुजूर सल्ल० उनसे कालिम–ए–तौहीद कहने के इच्छुक हुए कि आप इतना कह दें बाक़ी के लिए मैं अल्लाह तआला से अर्ज़ करूंगा, लेकिन उन्होंने क़ौम के डर से कलिमा नहीं पढ़ा।

मगर हज़रत अब्बास (रज़ि०) ने यह महसूस किया कि खामोशी से उन्होंने वह कलिमा पढ़ा, लेकिन हुजूर ने कहा कि मैंने नहीं सुना, तो आप (सल्ल०) को दुख हुआ, लेकिन दीन के बदलने के लिए उनकी मुरव्वत नहीं की, और न जब्र से काम लिया, कभी

इस्लाम के हवाले से अबू तालिब के लिए उम्मीद का कोई शब्द कहा और अपने वालिदैन (माता, पिता) के लिए दीन के मामले में भी कोई ऐसी बात नहीं की, आप (सल्ल०) की वह ईमानी शान भी जो आप के आखिरी रसूल के योग्य थी, कि कोई कितना ही महबूब और क़रीबी हो इस्लाम के ख़िलाफ कोई रिआयती शब्द नहीं फ़रमाया चाहे दुनियावी सम्बन्ध जितना भी करीबी हो।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की मक्की जिन्दगी में काफ़िरों की ओर से तकलीफ़ और उसके लिए बर्दाश्त के सिल्सिले में जो सख्त आज़माइशी मौके पेश आये, उनसे जेहनी परेशानी भी बहुत होती, और अबू तालिब के न रहने से कुछ संगीन खत्रात का अन्देशा भी बढ़ गया, इस पर आपको खयाल आया कि मक्का के क़रीब शहर ताइफ़ के किसी बुजुर्ग शखसियत की इन्सानी हमदर्दी अगर हासिल हो जाये तो दअ़वत के काम के खत्रात की कमी हो सकती है, यह उपाय इस लिए भी बेहतर मालूम हुआ कि एक ही वक्त में आप के चचा और आप की अहलिया (पत्नी) दोनों आप से जुदा हो गये थे, और आप को किसी मज़बूत शख़सियत की हमदर्दी की ज़रूरत महसूस हुई थी, जिसकी बिना पर, आप की नज़र ताइफ़ पर पड़ी जहां इस इलाक़े की असरदार खानदानी शखसियतों में कई एक थी। आप ने वहां जाकर उनसे बात करने का इरादा किया और तुरन्त सफर करके वहां तशरीफ़ ले गये और वहां के तीन अहम बड़े (सरबराह) लोगों में से किसी एक के हक़ के लिए हमदर्दी चाही, लेकिन ख़ुदा को यहां भी आपके हिम्मत और बर्दाश्त को क़ायम रखवाना था। अतः उनसे हमदर्दी नहीं मिली और उन्होंने मुसाफिरों के साथ किया जाने वाला अरबों के अखलाक़ को भी आपके साथ नहीं किया, और कुरैश के मुखालिफ़ाना रवैये को बुनियाद बताते हुए आपसे हमदर्दी करने को ठुकरा दिया बलिक आम मानवता का उल्लंघन करते हुए बदमाश लोगों को लगा दिया कि पत्थर मारें जिससे आप के कदम मुबारक लहूलहान हो गये परदेश में ऐसी बेबसी की हालत देखकर अल्लाह तआ़ला को खुसूसी रहम आया और विशेष मदद की पेशकश हुई और हज़रत जिब्रईल (अलै०) पैग़ाम लाये, कि भूचाल (ज़लज़ला) के ज़रिये इन ज़ालिमों को सख़्त सज़ा दी जा सकती है, लेकिन आप सल्ल० ने बन्दगी को प्राथिमकता दी, सजा देने की फरमाइश नहीं की और अपनी दुआ़ में केवल अपनी बेबसी के इज़हार के साथ हक़ के लिए सब्र व बरदाश्त और अपने रब की रज़ामन्दी ही को अपनाया, जिस का इजहार आप की इस दुआ़ के शब्दों से होता है जो इस मौक़े पर आप सल्ल० ने अदा फ़रमाया।

दूसरा मौक़ा वह आया जब आप के खान्दान ने आप की जान ही लेने की योजना बनाई, अपने चचा के इन्तिकाम के बाद ही से आपके क़बीले के जानी दुश्मन लोग जालिम हो गये थे, अब उन्होंने इस योजना को एक रात अन्जाम देने का प्रोग्राम बना लिया, उनके इस क़त्ल के इरादे को अल्लाह तआ़ला ने बता दिया।

अतः आप (सल्ल०) ने अपने रब की इजाज़त से रात के अंधेरे में अपने प्यारे वतन को छोड़ देने का फैसला किया और मदीना मुनव्वरा का सफर फरमाया जहां के लोग पहले से हमदर्दी और मदद का यक़ीन दिला चुके थे, और आपके प्यारे वतन को छोड़ कर वहां चले जाने पर उन्होंने पूरी मदद की मुसलमानों की एक बड़ी संख्या पहले इस शहर के लोगों की हमदर्दी से फायदा उठाने लगी थी, अब हुजूर (सल्ल०) के वहां आ जाने से मुसलमानों की अपनी एक सोसाइटी क़ायम हो गई, जहां से मुसलमानों की ज़िन्दगी का नया दौर शुरू हुआ, आप का और आप की जिन्दगी का नया दौर भी आज़माइशों और मुश्किल हालात से गुज़रने और ईमान व यक़ीन और हिकमत व सब्र की सिफात के साथ जीवन की अत्यन्त कठिनाइयों की राहों से गुज़रना था।

पहला दौर जो मक्का का तेरह साला दौर था उसमें ज़िन्दगी की मुश्किलात और रिश्तेदारों की दुश्मनी को बर्दाश्त करने में गुज़रा, यह दौर ईमान पर क़ायम रहते हुए दअ़वत व तबलीग़ और अच्छे अख़लाक़ का था जिसमें जुल्म का जवाब देने या उसका बदला लेने की इजाज़त न थी, अब नये दौर में दअ़वत के उद्देश्य को सीने से लगाए हुए सामाजिक ज़िन्दगी को आगे बढ़ाना था, और रिश्तेदारी से ऊपर उठकर विभिन्न समूहों और विरोधियों से मामला था यह जीवन विधान भी अपनी एक प्रकार की मुश्किलात रखता था और उसमें सामाजिक ज़िन्दगी के भी चैलेन्ज सामने आ रहे थे, जिनका मुकाबला भी करना था और जवाब भी देना था, मक्का की ज़िन्दगी में मुसलमान कमज़ोर थे, लेकिन आप (सल्ल०) ईमान व अमल

और हिम्मत में मज़बूत थे।

अब मदनी ज़िन्दगी में कमज़ोरी की जगह सामाजिक ताक़त हासिल हो गई थी, इस की बिना पर अपने दुश्मनों से सामाजिक रूप से मामला रखना था और उनकी दुशमनी पर अच्छे अन्दाज़ से बदला देना था, इस तरह इन नये हालात में नये तरीक़े से हिम्मत करना था, पिछला हाल बदल जाने की दुशवारियों में तब्दीली नहीं आई मगर अब दुशवारियों का तरीक़ा दूसरा हो गया, अब समाजी ज़िन्दगी में उभरने वाली मुश्किलात सामने आई जिनके लिए हिम्मत और हिकमत की उसी तरह ज़रूरत बाक़ी रही जो पहले थी और हुज़ूर (सल्ल०) ने अपने सहाबा को उसी के अनुसार चलाया।

मुसलमानों पर अब उनके दुश्मन सामूहिक रूप से हमला करते और आप मुसलमानों के साथ उनका उसी के अनुसार मुकाबला करते, फिर खुद शहर के अन्दर सामूहिक ज़िन्दगी में यहूदियों की ओर से, और मुनाफ़िकों की ओर से पेश आते तो उनको झेलते, और कभी अच्छे अन्दाज से मुकाबला करते।

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाहि (सल्ल०) को अल्लाह तआ़ला ने उच्चकोटि का इन्सानी गुण दिया था जिससे अपने उद्देश्य के लिए रिश्तेदारों से इख्तिलाफ़ के बावजूद अच्छे आचरण ही का प्रयोग किया।

ज़िन्दगी को जैसी-जैसी ज़रूरियात हुई ज़िम्मेदारी के साथ पूरा किया ज़िन्दगी के होशमन्दी का ज़माना जो आमतौर से इन्सान के छः साला उमर से शुरू होता है आप के लिए हालात बिल्कुल मुखालिफ थे, मां बाप दोनों से महरूम हो चुके थे, लेकिन आपने अपनी ज़िन्दगी पर उसका कोई प्रभाव नहीं होने दिया और क़रीबी रिश्तेदारों से जो मुहब्बत मिल सकती थी उसीसे काम चलाया, शुरू से जवानी तक अपने शरीफ़ाना अख़लाक़ को अपने पूरे समाज में तस्लीम करा लिया, और अमली ज़िन्दगी में रोज़ी रोटी की ज़रूरत को शरीफ़ाना अन्दाज़ में पूरा किया और घरेलू ज़िन्दगी भी अच्छे अन्दाज़ में शुरू की, और नुबूव्वत की ज़िम्मेदारी मिलने पर उसके तक़ाज़ों को पूरा किया और इसमें जो परेशानियां आई उसे बर्दाश्त किया, अब जब कि विरोधियों ने आपकी ज़िन्दगी ही को ख़त्म करने का फैसला कर लिया तो जगह छोड़ने का एक नया दौर शुरू हुआ, यह सब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हुआ जिसको अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने हबीब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से फरमाता है –

अनुवाद –"आप को आपके रब ने छोड़ नहीं दिया है नज़र अन्दाज़ नहीं कर दिया है, और न अपनी पसंद से हटाया है, मगर आखिरत का मामला आपके लिए इस ज़िन्दगी के मामला से ज्यादा बेहतरी का है और आपको जल्दी ही आपका रब इतना देगा कि आप खुश हो जाएंगे, क्या आप देखते नहीं कि हम ने आपको यतीम पाया तो आपके लिए ठिकाना का इन्तिज़ाम किया, और आपको राह तलाश्ते हुए पाया, तो आपको सही राह पर डाला, और आप को मआश के एतिबार से दूसरों को मातहत पाया तो आप को आज़ाद करवा के ख़ुद कफील कर दिया, अब इसका आप ख्याल रखें कि यतीम पर सख़्ती न करें, और मांगने वाले को झिड़कें नहीं, और आप पर आपके रब के जो एहसानात हैं उसका आप ज़िक्र करें और लोगों को बताएं।"

मक्का में जब दुश्मनी बर्दाश्त की हद आगे निकल गयी तो आप अपने रब के हुक्म से मदीना चले आये लेकिन मक्का के दुश्मनों ने आपके मदीना चले जाने पर भी, आपसे दुश्मनी नहीं छोड़ी, और पूरी तरह जंग के हालात पैदा करने लगे, अतः एक के बाद एक जंग शुरू कर दी।

पहली जंग कुरैश के काफिरों ने तीन सौ किलो मीटर का फासला तय करके मदीना से केवल डेढ़ सौ किलोमीटर के करीब पहुंच कर किया और दूसरी जंग साढ़े चार सौ किलोमीटर तय करके मदीना तय्यिबः पहुंच कर किया, इसी तरह जंगें होती रहीं और हुज़ूर (सल्ल०) हिकमत से मुकाबला करते रहे मदीना में यहूद की एक बड़ी संख्या थी जिनसे अपने मुआ़हिदा किया था, लेकिन अन्दर से यहूद ने कुफ्फारे मक्का से साज़िश की जिसके साबित होने पर मुआ़हिदा की मुख़ालिफ़त की बिना पर उनके खिलाफ़ भी कार्रवाई करनी पड़ी, यह सब ऐसी हिकमत से आपने अन्जाम दिया कि उसमें अक़ल व हिकमत, और इन्सानियत की पूरी रिआ़यत के साथ हुआ।

इस तरह हुज़ूर (सल्ल०) की ज़िन्दगी के चारों दौर बचपने से लेकर जवानी तक, जवानी से नुबूवत के मिलने तक, और नुबूवत का मक्की दौर और फिर मदनी दौर, यह सब इन्सानी वसूलों के अनुसार पूरा किया, फिर समाज के विभिन्न हालात से मुकाबला करके मिसाली नमूने पेश किए कि ग़ौर करने

से अक़्ल दंग रह जाती है। इन मिसालों को विस्तार पूर्वक बयान किया जाए तो कुछ लाइनें नहीं, किताब की मोटी मोटी जिल्दें चाहिए।

हमको सीरत का अध्यन उसके विभिन्न हालात के उन भागों को सामने रखते हुए करना चाहिए, इस तरह हमारे सामने एक बहुत बड़ी दुनिया–ए–इन्सानियत खुलकर सामने आती है और मुलाकात के लिए ज़िन्दगी के हर दौर में और हर तरह के हालात में यह बातें नमूना बनती हैं और उनको नमूना बनाने का कुर्आन मजीद में भी हुक्म आया है–

"तुम लोगों के लिए अर्थात ऐसे व्यक्ति के लिए जो अल्लाह से और आख़िरत के रोज़ से डरता हो और कसरत से ज़िक्र इलाही करता हो रसूलुल्लाह का एक बेहतरीन नमूना है।"

मदीना में अपने मानने वालों की संख्या और इस्लाम के अनुसार सामाजिक ज़िन्दगी गुज़ारने वालों की संख्या, बढ़ गई तो दीने हक़ की दअ़वत पहुंचाने का मौक़ा बड़े पैमाने से मिला। इस तरह से मुकम्मल दीने हक़ को ज़िन्दगी में क़ायम किया गया और हुजूर (सल्ल०) ने अल्लाह की वह्य की रहनुमाई में और अपने नबवी अन्दाज़ में उच्च कोटि की मानवता वाला समाज तैयार किया, जिसके तरीक़े को निश्चित ही नहीं किया बल्कि उनको तर्बियत भी दी जिस को उच्च आचरण, मानवता, एक दूसरे के साथ हमदर्दी और हक़ के रास्ते से भटके हुए इन्सानों तक को दीन व आख़िरत की कामियाबी का पैग़ाम पहुंचाया और छोटे दायरे से निकल कर विश्वव्यापी दायरे तक इन्सानी सुधार के पैग़ाम पहुंचाने का काम शुरू हो गया।

१३ साल की मक्की ज़िन्दगी में बराबर सख्त से सख्त तकलीफें झेलने और जुल्म बर्दाश्त करने और सब्र का सुबूत देते हुए आखिरकार वतन व माल को छोड़ कर मजबूर होने के बाद पेश आया, मक्का की १३ साल की मुद्दत में मुसलमानों को मुश्रिकीने मक्का की ओर से किए जाने वाले हर जुल्म को बर्दाश्त करते रहने को कहा गया था और हुक्म था कि अपने हाथ रोके रखो, और नमाज़ काइम करते रहो अतः उन्होंने ऐसा ही किया, एक ज़र्रा बराबर भी बदले या मुक़ाबले का तरीक़ा नहीं अपनाया और केवल अपना सुधार करते और दूसरों को नसीहत पर उभारते रहे। लेकिन जब वतन छोड़ कर परदेश में ठहरने पर भी जुल्म ज़्यादती करने की कोशिश होने लगी तो मुसलमानों को इजाज़त मिली कि वह अपने को तैयार करके मुकाबला कर सकते हैं।

अतः दुशमनी का जवाब देने का यह पहला मौक़ा था, जो बद्र में पेश आया वह केवल अल्लाह के भरोसे पर मैदाने जंग में आए, तो अल्लाह तआ़ला की ओर से खुसूसी मदद आई फरिश्तों ने पूरी तरह जंग में भाग लिया और मुश्रिकीन की फौज को खुली हार हुई और मुसलमानों को १३ साल की तकलीफों का पहली बार बदला मिला यह बदला तीन प्रकार की विशेषता पर आधारित था।

पहली विशेषता तो यह कि १३ साल तक तकलीफदे हालात में भी मानवता के शिखर पर क़ायम रहे। और केवल हुक्म इलाही को पूरा करने में सख्त से सख्त ज़्यादती का भी जवाब देने से गुरेज़ करते रहे, और बदले के लिए हुक्म इलाही का इन्तिज़ार करते रहे और अल्लाह तआ़ला के हुक्मों को पूरा करने में सब्र व बर्दाश्त का सुबूत देने के इम्तिहान में १०० प्रतिशत कामियाब रहे उनमें वह एतिमाद पैदा हुआ जिसने उनकी आइन्दा की ज़िन्दगी में कोशिश की राह मे उनके कदमों को मज़बूत बनाया और हिम्मत बढ़ाई, और वह अपने परवरदिगार के फरमां बरदार बंदे होने के साथ एक बहुत बड़ी ताक़त बन गये।

दूसरी विशेषता यह है कि अल्लाह तआ़ला ने इस सब्र और हक़ के लिए जानी व माली तकलीफ़ उठाने को कुबूल फरमाया और उनको जन्नत का हक़दार बनाया जो बड़े खुशख़बरी की बात है।

तीसरे यह कि दुश्मन की दुश्मनी का जवाब देने की इजाज़त मिलने पर उनको मुकाबला का मौक़ा मिला और उस दुश्मन को जो अपने घमंड में शेर बना हुआ था पता चला।

मुसलमानों जो मज़लूम हो गये थे। अब दुश्मन तबाह हुआ और दुश्मन के सामने अपना सर उठा कर मुकाबला करने की ताक़त हासिल हुई। मुसलमानों को अपने दीन की पाबन्दी करने पर, उनको बद्र की फतह की सूरत में फायदे हासिल हुए और वह एक ताक़तवर उम्मत बने, फिर वह दुश्मनों का मुक़ाबला कामियाबी के साथ करते हुए ८ हि० में मक्का मुकर्रमा में फ़ातिहाना (विजयी) दाखिल हुए और यह फ़तेह उन्होंने बिना जंग के हासिल की, और दुनिया ने देखा कि जो कामियाबी मानवता से मिली है वह

ताक़त से नहीं, सीरत पर नज़र डालने से, यह बात साफ जाहिर होती है कि इन्सानी समाज के भटके हुए समाज को हक़ की राह पर लगाना और इन्सान को हैवानी भटकती हुई राहों से हटा कर अपने पालनहार के हुक्म पर चलाना और आपसी इन्सानी हमदर्दी और अच्छे आचरण की दअ़वत और उसके लिए कोशिश ही एक मात्र उद्देश्य था, और तमाम घटनाएं सब इसी के इर्द गिर्द घूमती थी और मुकाबला व जंग बहुत थोड़ी, वह भी मानवता के ढांचे में रहते हुए की गई।

इससे मालूम होता है कि हुजूर (सल्ल०) के ज़िन्दगी की घटनाएं और हालात आप (सल्ल०) के रब की ओर से इस तरह हुई कि क़ियामत तक आने वाले मुसलमानों के लिए ज़िन्दगी के हर मोड़ और हर सूरते ह़ाल में उनसे नमूना मिल सके, उसके लिए ऐसे नमूने रहती दुनिया तक कायम किए गये। हुजूर (सल्ल०) को तकलीफ़ों से भी गुज़ारा गया, तकलीफ़ और राहत दोनों तरह के ह़ालात से गुज़ारा गया, इस तरह आप की ज़िन्दगी पूरी इन्सानी बिरादरी के लिए मिसाल भी है और तअलीम व तर्बियत और रहनुमाई का बेहतरीन ज़रिया भी है।

अनुवादक– मुह़म्मद सरवर फ़ारूकी नदवी

(पृष्ठ ६ का शेष)

कोई कभी किए बगैर। (मुस्लिम)

मालदारों के लिए वअ़ीद –

१३६. ह़ज़रत अबूज़र (रज़ि०) से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाहि सल्ल० के पास पहुंचा आप कअ़बः के पास में आराम फरमा थे, आप सल्ल० ने मुझे देखा तो फरमाया रब्बे कअ़बः की क़सम वही घाटे में हैं, मैं आया और आप के पास बैठ गया, फिर तुरन्त उठ खड़ा हुआ और कहा अल्लाह के नबी मेरे मां बाप आप पर कुर्बान हों वह कौन लोग हैं। आप ने फ़रमाया यह वह लोग हैं जिनके पास माल ज़ियादह है सिवाय उन लोगों के जिन्होंने खूब खर्च किया सामने वालों पर पीछे और दाएं बाएं रहने वालो पर और ऐसे लोग बहुत कम हैं। (मुस्लिम)

दो तरह के लोगों पर रश्क करना चाहिए –

१४०. ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया कि रश्क तो दो ही क़िस्म के आदमियों पर करना दुरुस्त है, एक ऐसा आदमी जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया हो और फिर उसे राहे हक़ में खर्च करने की खूब तौफ़ीक़ दी हो, और एक ऐसा शख़्स जिसको अल्लाह तआ़ला ने हिकमत व अक़लमंदी की दौलत दी हो और वह उसके ज़रिये से फैसला करता हो, और लोगों को सिखाता हो। (मुस्लिम)

बिना ज़रूरत माल खर्च करना–

१४३. ह़ज़रत अबू उमामा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया। ऐ बनी आदम तुम अपना बचा खुचा खर्च कर दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर उसको रोके रखो, तो तुम्हारे हक़ में बुरा है ज़रूरत भर रोक लो तो काबिले मलामत नहीं, खर्च करने में जो क़रीबी लोग हों उनसे शुरू करो ऊपर का हाथ (अर्थात देने वाला) नीचे के हाथ (अर्थात लेने वाले) से अच्छा है।

जो राहे खुदा में खर्च कर दिया वही बाक़ी है–

१४४. ह़ज़रत आइशा से रिवायत है कि एक बकरी ज़िब्ह हुई रसूलुल्लाहि सल्ल० ने पूछा इसमें से क्या बचा, ह़ज़रत आइशा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि इसका केवल दस्त बाक़ी है आप सल्ल० ने फरमाया दस्त (के गोश्त) के सिवा सब बाक़ी है।

सबसे अफज़ल सदक:

१४७. ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि एक शख़्स रसूलुल्लाहि सल्ल० के पास आया और उस ने अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० कौन सा सदकः ज़ियादा अज्र दिलाता है आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तुम इस हाल में सदकः करो कि तुम तन्दुरुस्त हो, माल का शौक व लालच हो, फक्र का खटका लगा हो, मालदार रहने की उम्मीद बंधी हो, और खर्च में टाल मटोल न करो कि जब मौत का वक्त आ जाए, तो वसीयत करने लगो कि फुलां का इतना, हिस्सा, फुलां का इतना हिस्सा हालांकि वह फुलां का हो चुका है। (बुखारी, मुस्लिम)

जब मोमिन औ़रत ना मह़रम के सामने आजाए तो

अपनी निगाह नीची रखे अपनी आबरू की हिफ़ाज़त करे और अपने बनाव सिंगार को प्रकट न करे। इस दशा में मर्द नज़र नीची कर ले बे ज़रूरत ना मह़रम से बात न करे यदि मर्द औ़रत को घूरेगा तो पापी होगा । फ़रमाया रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ना मह़रम औ़रतों पर दाख़िल होने से बचो। पूछा गया देवर ? फ़रमाया देवर तो मौत है। (सहीहैन)

उत्तरी सीमा से मुसलमानों का दाख़िला

आमिना उस्मानी

दुख की बात यह है कि मुहम्मद बिन क़ासिम अधिक समय तक यहां न ठहर सका और जल्द ही अपने देश वापस चला गया और सिन्ध की ओर से मुसलमानों के आगे बढ़ने का सिलसिला बन्द हो गया। इसके बाद उत्तरी सीमाओं से मुसलमान हिन्दुस्तान आना शुरू हुए यहां उनका आना ऐसा ही था जेसा कि उससे पहले हिन्दू आर्य आ चुके थे और मौलाना उबैदुल्लाह सिन्धी के कथनानुसार यह बात सही थी कि ये मुस्लिम आर्य एक नयी सभ्यता और नया धर्म रखते थे।

कुछ इतिहास को तोड़ने मरोड़ने वाले इतिहासकारों ने मुसलमानों के इन हमलों को धार्मिक उत्तेजना कह कर बदनाम करने की कोशिया की है और हमला करने वालों के साथ ही इस्लाम पर भी आलोचना की है।

धार्मिक स्वतंत्रता

सिन्ध के पराजितों में से जिन्होंने मुस्लिम शासन का पालन किया तथा जिज़्या देने की बात मान ली उनको मुहम्मद बिन क़ासिम ने धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की और यह अनुमति दे दी कि वे अपनी धार्मिक रस्में व अन्य काम काज बिना किसी भय व शंका के पूरी करें, ब्रह्मनाबाद के अधीन आने के बाद मुहम्मद बिन क़ासिम ने वहां के ग़ैर मुस्लिमेां के लिए जो प्रसिद्ध घोषणा की थी उसमें यह साफ़ साफ़ उल्लेख था कि जो लोग मुस्लिम शासन के अधीन रहते हुए अपने धर्म ही पर रहना पसन्द करेंगे उनको अपने धर्म पर चलने की पूरी स्वतंत्रता होगी। इसके लिए उनसे कोई सख्ती नहीं होगी न किसी प्रकार का उन पर प्रतिबन्ध लगाया जायेगा।

इस समस्या पर इससे अधिक स्पष्टीकरण ब्रह्मनाबाद के प्रसिद्ध मन्दिर के पुजारियों की मुहम्मद बिन क़ासिम की सेवा में निवेदन और उसके उत्तर में मिलता है। इस क़स्बे पर मुसलमानों के आधिपत्य के बाद वहां के सामान्य लोग इतने भयभीत हुए कि उन्होंने मन्दिर में आना जाना बन्द कर दिया। इस कारण मन्दिर के पुजारी और अन्य सेवक बहुत अधिक परेशानी का शिकार हुए इसलिए कि उनका सारा खानपान व गुज़र बसर मन्दिर के नज़रानों तथा भेंट पर था। अतः उन्होंने मुहम्मद बिन क़ासिम (जिनकी दया, उदारता व मानव हमदर्दी उस समय तक काफी प्रसिद्ध हो चुकी थी) की सेवा में प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया जिसमें अपनी परेशानी का उल्लेख करके यह निवेदन किया कि इस मन्दिर की सुरक्षा की जाए और लोगों पर छाया भय व आतंक दूर किया जाए ताकि उनकी आय का साधन बना रहे।

मुहम्मद बिन क़ासिम ने इस आवेदन पत्र की रिपोट हज्जाज को भेजकर उनकी राय मालूम की। गवर्नर ने इसका जो जवाब भेजा वह मुस्लिम शासन के अधीन गैर मुस्लिमों की जान व माल की सुरक्षा और उनकी धार्मिक स्वतंत्रता की समस्या पर बड़ा ही महत्वपूर्ण है उसका अनुवाद देखिए–

"तुम्हारा पत्र मिला और हालात से अवगत हुआ। यदि ब्रह्मनाबाद के मुखिया या अन्य प्रतिष्ठान लोग अपना मन्दिर आबाद करना चाहते हैं तो अब जबकि उन्होंने हमारे अधीन रहना स्वीकार कर लिया है और राजधानी को माल (जिज़्या आदि) अदा करने की बात मान ली है, तो इस कर के अतिरिक्त उन पर हमारा कोई और अधिकार मुखिया या अन्य प्रतिष्ठित लोग अपना मन्दिर आबाद करना चाहते हैं तो अब जबकि उन्होंने हमारे अधीन रहना स्वीकार कर लिया है और राजधानी को माल (जिज़्या आदि) अदा करने की बात मान ली है, तो इस कर के अतिरिक्त उन पर हमारा कोई और अधिकार नहीं है। जब वे ज़िम्मी हो गए तो उनकी जान व माल पर किसी प्रकार का हस्तक्षेप उचित नहीं है उनको इजाज़त दी जाए कि वे अपने भगवान की पूजा करें। किसी को भी अपने धर्म पर चलने से रोका न जाए ताकि वह अपने घर में जिस प्रकार चाहें जीवन बिताएं।"

इस उत्तर के मिलने के बाद मुहम्मद बिन क़ासिम ने शहर के विशिष्ट लोगों और पुजारियों को इस उत्तर से अवगत कराया और उनके सामने यह घोषणा की कि हर व्यक्ति बिना किसी भय व शंका के मन्दिर में आ जा सकता है और अपने धर्म के अनुसार पूजा कर

सकता है उससे इस मामले में किसी प्रकार की भी पूछताछ नहीं की जाएगी। दिलचस्प बात यह है कि इस अवसर पर मुहम्मद बिन क़ासिम ने ब्रह्मनाबाद के शहरियों को भी यह नसीहत की कि वे प्राचीन रस्म के अनुसार पुजारियों को चढ़ावा व भेंट देने का काम बराबर जारी रखें और मुख्य रूप से ब्राहमणों पर जो ग़रीब थे दिल खोल कर खर्च करें। इसके अलावा उन्होंने यह निर्देश भी दिया कि मालगुजारी में तीन प्रतिशत ब्राह्मण पुजारियों के लिए अलग रखें जाएं ताकि आवश्यकता पड़ने पर उन पर खर्च किया जा सके। ब्राह्मण या ब्राह्मण पुजारियों के साथ मुहम्मद बिन क़ासिम की इतनी अधिक हमदर्दी व सहानुभूति सम्भव है किसी राजनीतिक कारण से रही हो लेकिन इसे उदारता का एक उदाहरण भी कहा जा सकता है।

मुहम्मद बिन क़ासिम की हुकूमत के अधीन सिन्ध में हिन्दुओं को अपने मन्दिरों में केवल पूजा पाठ ही की स्वतंत्रता न थी, बल्कि उनको अपने प्राचीन पूजा स्थलों की मरम्मत व नवनिर्माण की भी अनुमति प्राप्त थी। यह बात ब्रह्मनाबाद के पुजारियों के आवेदन पत्र जवाब से स्पष्ट होती है। दूसरे मुहम्मद बिन क़ासिम ने इस अवसर पर यह भी स्पष्ट किया कि इन मन्दिरों की वही हैसियत व महत्व है जो इराक़ व शाम में यहूदियों के कलीसों, ईसाइयों के गिरजों और अब्बासी शासन में किताब वालों (यहूदी व ईसाई) और मजूसियों के प्राचीन पूजा स्थलों को न केवल सुरक्षा उपलब्ध करायी गयी थी बल्कि उनके मानने वालों को अपने अपने पूजा स्थलों के प्रबन्ध व देखरेख और आवश्यकता पड़ने पर उनकी मरम्मत की स्वतंत्रता भी प्राप्त थी। यहां यह भी जान लें कि सिन्ध में अरबों के शासन के अधीन यह धार्मिक स्वतंत्रता न केवल ब्रह्मणों या हिन्दू धर्म के मानने वालों को हासिल थी अपितु बुद्ध मत के अनुयायियों को भी यह अधिकार हासिल था।

मुहम्मद बिन क़ासिम ने सिन्ध के ग़ैर मुस्लिमों (ज़िम्मियों) को धार्मिक स्वतंत्रता देने के साथ, उनकी सामाजिक सुरक्षा व अधिकार का भी पूरा पूरा ध्यान रखा। उनको इस बात की पूरी पूरी छूट थी कि वे अपने सामाजिक कार्यों व उत्सवों, पर्वों को मनाते रहे और नियमानुसार अपने विशेष त्यौहार मनाते रहें। ब्रह्मनाबाद के नागरिकों के सामने उन्होंने खुले रूप से यह घोषणा की कि उनको अपनी रस्मों व परम्पराओं को पूरा करने व त्यौहारों को अपने ढंग से मनाने की पूर्ण स्वतंत्रता है।

मुहम्मद बिन कासिम के शासन के अधीन सिन्ध के हिन्दुओं को जो सामाजिक सुविधाएं व छूट प्राप्त हुई और स्वाभिमान व सम्मान के साथ उनको जीवन बसर करने का जो अवसर मिला उसका अनुमान स्वयं उनके वक्तव्यों से लगाया जा सकता है। जब जिज़्या देने की शर्त पर हुकूमत की ओर से उपलब्ध धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक सुविधाएं व छूट वहां के प्रभावशाली लोगों के सामने आयीं और उन्होंने यह भी देखा कि उनकी सामाजिक स्थिति वापस दिलायी गयी और पूर्व शासक परिवार के लोगों में मुख्य रूप से योग्य व अनुभवी लोगों को सरकारी काम काज में लगाया गया और उनको पद व उपाधियों से भी सुशोभित किया गया तो उन्होंने गांव में जा जाकर लोगों के सामने मुस्लिम शासकों के बारे में अपने विचार और लोगों को हुकूमत के आज्ञापालन के लिए प्रोत्साहित करना आरम्भ किया। उनके विचारों को यहां सार में प्रस्तुत किया जा रहा है –

"ऐ लोगो ! तुम्हें मालूम है कि राजा दाहिर अब इस संसार में नहीं है। सिन्ध के विभिन्न क्षेत्रों में अरबों की हुकूमत स्थापित हो चुकी है। इस शासन के अधीन शहर व गांव में बड़े छोटे समान हो गए हैं। हमारे मामले अब (मुस्लिम) शासकों से जुड़ गए हैं। यदि मुसलमानों का आदेश न हो तो हमें माल न मिले औरनकाम प्राप्त हो। हम पर इस हुकूमत की यह कृपा है कि हम आज अच्छे पदों और सम्मानित स्थानों पर हैं। न तो हम अपने देश से निकाले गए और न अपनी दौलत से वंचित किए गए। हमारी सम्पत्ति, सन्तान और घर पूरी तरह सुरक्षित है।"

ऐतिहासिक मूल स्रोत में यह भी मिलता है कि सामान्य लोगों के सामने विचारों को व्यक्त करने का यह परिणाम सामने आया कि ग्रामीण क्षेत्रों से लोग भारी संख्या में मुहम्मद बिन क़ासिम की सेवा में उपस्थित होने लगे। उनकी हुकूमत के प्रति आज्ञापलन की बात व्यक्त की और उसके सरकारी अधिकारियों के बारे में जानकारी प्राप्त की। इसके अतिरिक्त मुहम्मद बिन क़ासिम ने शहर के सारे लोगों को यह विश्वास दिलाया कि वे बिना किसी भय व शंका के अपने अपने कामों में लगे रहें। हर प्रकार से प्रसन्न रहने की कोशिश करें। उनके अधिकारों का

हनन नहीं होने दिया जाएगा।

आर्थिक अधिकार

इस्लामी क़ानून के अनुसार मुस्लिम शासन के अधीन जिन ग़ैर मुस्लिमों को ज़िम्मी के रूप में मान्यता दी जाती है उनकी जान व माल की सुरक्षा के साथ उनके घर, सम्पत्ति की सुरक्षा की ज़मानत भी शासन ही की होती है। इस्लाम में इनकी जान की भांति उनकी सम्पत्ति व जायदाद को भी उतना ही सम्मान योग्य समझा जाता है कि इस्लामी विधान किसी के लिए यह भी उचित नहीं रखता कि वह उनकी उन वस्तुओं को तबाह व बर्बाद करके जिनका वैधानिक रूप से एक ज़िम्मी के लिए मुस्लिम शहरों में लाना या रखना जायज़ नहीं। यह और बात है कि ये इस क़ानून का उल्लंघन करने के कारण दंड के अधिकारी माने जाएंगे। इसी के अनुसार मुहम्मद बिन क़ासिम ने देबल, नेगेन, बहमन आबाद और अन्य शहरों में अपनी व्यवस्था स्थापित करते हुए पराजितों को यह विश्वास दिलाया था कि हुकूमत उनकी जान व माल की सुरक्षा की ज़मानत लेती हैं और वह किसी को यह अनुमति न देगी कि वह उनकी जायदाद व सम्पत्ति को क्षति पहुंचाए।

अपने प्रसिद्ध ब्रह्मनाबाद घोषणा पत्र में उन्होंने यह स्पष्ट रूप से बता दिया कि पराजितों में से जिन लोगों को ज़िम्मी बना दिया गया है उनके माल व जायदाद उनके अपने ही पास रहेंगे और उनकी किसी चीज़ में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा। इसके अतिरिक्त मुहम्मद बिन कासिम के पत्र के जवाब में पराजितों की स्थिति को स्पष्ट करते हुए हज्जाज बिन यूसुफ़ ने दो टूक यह लिखा कि जब वे ज़िम्मी हो गए हैं बलिक उनकी जान व माल की सुरक्षा उपलब्ध कराना हम पर अनिवार्य हो गया। इससे भी महत्वपूर्ण यह कि केवल ब्रह्मनाबाद के इलाक़े में दस हजार ऐसे व्यापारियों, हस्तकला शिल्पों और किसानों को आर्थिक सहयोग प्रतिजन चांदी के बारह दिरहम दिया गया जिनको इस इलाक़े में युद्ध के दौरान आर्थिक क्षति उठाना पड़ी थी इससे बढ़कर आर्थिक सुरक्षा का दूसरा कौन सा उदाहरण हो सकता है।

मुहम्मद बिन क़ासिम ने ग़ैर मुस्लिमों के विभिन्न वर्गों को सामाजिक व आर्थिक सुविधाएं देने में उदारता का प्रदर्शन किया जिनमें ब्राह्मण, बौद्ध, उच्च व निम्न जाति, धनी व ग़रीब सभी सम्मिलित थे लेकिन ऐतिहासिक मूल स्रोत मुख्य रूप से हजनामा में ब्राह्मणों के संदर्भ में इसका कुछ अधिक उल्लेख मिलता है, जैसा कि अभी बताया गया है। इसका एक कारण यह हो सकता है कि ब्राह्मण उस समय के समाज में पहले से सभ्य व प्रभावशाली माने जाते थे और राजनीति एवं शासन के क्षेत्र में भी उनकी सत्ता स्थापित थी इसलिए भी उनकी कुछ विशेष सहानुभूति व आवभगत करना आवश्यक था।

प्राचीन व आधुनिक मुस्लिम इतिहासकारों की दृष्टि से मुहम्मद बिन क़ासिम के उच्च गुणों मुख्यरूप से जनता के साथ सहानुभूति, उदारता, न्याय और सामान्य लोगों के हितों के लिए असाधारण दिलचस्पी को उजागर करने वालों की कमी नहीं। यहां "महान वह है जिसे दुश्मन भी स्वीकार करें" के उसूल पर कुछ ग़ैर मुस्लिम इतिहासकारों के विचार व रायों को नक़ल करना उचित मालूम होता है।

"हिस्ट्री आफ़ जहांगीर" के लेखक डाक्टर बैनी प्रसाद अपनी किताब में एक जगह मुहम्मद बिन क़ासिम की हुकूमत पर समीक्षा करते हुए लिखते हैं– हिन्दुस्तान में किसी हुकूमत के लोकप्रिय होने के लिए एक आवश्यक शर्त यह भी है कि उसके नागरिकों को धार्मिक कामों को करने और पूजा करने में स्वतंत्रता हो। हिन्दुस्तान के मुस्लिम आक्रमणकारियों ने धार्मिक उदारता के महत्व को बहुत जल्द समझ लिया था और अपनी कूटनीति इसी के अनुसार बनायी। आठवीं शताब्दी में मुहम्मद बिन क़ासिम ने सिन्ध में अपनी हुकूमत की जो व्यवस्था स्थापित की वह सन्तुलित व उदारता का एक जग–मगाता उदाहरण है।

मुस्लिम व ईसाई शासकों की तुलना

ईसाई दुन्या ने हाथों में सलीब उठाए हुए इस्लामी जगत पर आक्रमण किया और शाम के प्रसिद्ध शहर माअरतुन्नोमान का घेराव कर लिया। मुसलमान नागरिक हथियार डालने पर विवश हो गए। ईसाई सरदारों से उन्होंने अपनी जान, माल व इज्ज़त की सुरक्षा का पक्का वादा लेकर शहर के दरवाज़े उनके लिए खोल दिए। मगर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब इन दरिन्दों ने अचानक मुसलमानों की हत्याएं करना शुरू कर दीं और इस प्रकार उस वादे व सन्धि का उल्लंघन करके अपने सलीबी शैतान के रूप में पेश किया। पश्चिमी इतिहासकारों का अनुमान है कि इस घटना में क़त्ल

होने वाले मर्द व औरतों और बच्चों की संख्या एक लाख से कम न थी।

इस भयानक व निर्मम घटना के बाद सलीबी लश्कर ने बैतुलमक्दिस का रुख किया और उसका घेराव कर लिया। कुछ दिन के बाद वहां के निवासियों को आभास हुआ कि उनको पराजय का मुंह देखना पड़ेगा। अतएव उन्होंने सलीबी सेनापति से अपने नागरिकों की जान व माल की सुरक्षा की ज़मानत चाही तो उसने अपना झंडा दिया कि वे मस्जिदे अक़्सा के ऊंचे हिस्से पर लगा दें और बिना किसी भय के दरवाज़ा खोल दें।

सलीबी सेना ने शहर में प्रवेश करते ही अपनी गंदी व काले करतूत का प्रदर्शन शुरू कर दिया। शहर के लोगों ने उनके अत्याचारों से बचकर मस्जिदे अक़्सा में शरण ली मगर इन दरिन्दों से वे वहां भी न बच सके और एक एक करके सारे मुसलमान क़त्ल कर दिए गए। मस्जिद खून से भर गयी। शहर की गलियां और सड़कें इन्सानी खून, खोपड़ियों और कटे हुए अंगों से पट गयीं।

इतिहासकारों का बयान है कि केवल मस्जिदे अक़्सा के अन्दर क़त्ल किए जाने वालों की संख्या सत्तर हज़ार थी। इनके अलावा महिलाएं और बच्चे भी थे। पश्चिमी इतिहासकारों ने इस बात को माना है बल्कि बहुत से लिखने वालों ने जो ईसाई हैं। इस घटना का गर्व के साथ उल्लेख किया है।

इस दुखद व निर्मम घटना के ६ साल बाद सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने बैतुल मक़्दिस पर विजय का झंडा लहराया। शहर के अन्दर एक लाख यूरोपीय ईसाई मौजूद थे। इनको जान व माल की ज़मानत दी और इनमें जो विशिष्ट लोग थे उनसे बड़ी मामूली रक़म लेकर चालीस दिन के अन्दर शहर से चले जाने का अवसर दिया। ८४ हज़ार ईसाई अपने भाइयों से जा मिले। गरीबों की बड़ी संख्या को बिना किसी जुर्माने के चले जाने दिया। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के भाई मालिक सालेह ने दो हज़ार ईसाइयों को अपनी जेब से रक़म अदा की और महिलाओं के साथ इतना सम्मान जनक व अच्छा व्यवहार किया कि आज इस प्रगतिशील दुन्या का कोई भी शासक इसके बारे में सोच भी नहीं सकता। अन्त में यूरोप का बड़ा पादरी शहर से जाने लगा तो उसके साथ गिरजा घरों, मस्जिदें अक़्सा, गुम्बदे सख़रा और क़यामह चर्च की इतनी बड़ी दौलत थी जिसका ज्ञान केवल अल्लाह ही को था। सुल्तान सलाहुद्दीन के कुछ साथियों ने सुझाव दिया कि इतनी ढेर सारी दौलत ले जाने न दी जाए। सुल्तान ने जवाब दिया "मैं वचन देकर उसे तोड़ना नहीं चाहता" और उस बड़े पादरी से भी वही प्रतिदान की रक़म वसूल की जो एक सामान्य आदमी से ली थी।

हमारी ज़िम्मेदारी

अल्लाह के उन बन्दों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाना जो अब तक किसी वजह से महरूम हैं। हमेशा की तरह इस वक़्त भी हर मुसलमान मर्द औरत की ज़िम्मेदारी है यह वह फ़रीज़ा है जिसे हज्जतुलविदाअ़ में रहमतुल्लिल आलमीन ने अपनी उम्मत के ज़िम्मे किया था।

मु० हमज़ा हसनी एडीटर
मासिक रिज़वान लखनऊ

MOHD. ASLAM
(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

जिन्नात का परिचय

अबू मर्गूब

खजूरें चुराते जिन पकड़ा गया

सहीह बुख़ारी किताब बदउलख़ल्क़

एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़कात की एकत्र की हुई चीजों पर (जिसमें खाने चीज़ें खजूरें भी थीं) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु को उसका निग्रां (नियंत्रक) नियुक्त किया। वह कहते हैं रात में कोई आया और कुछ खाने की चीज़ें लेने लगा। मैं ने उसे पकड़ लिया और कहा कि तुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने पेश करूंगा। उसने क्षमा चाही और बताया कि वह बाल बच्चे वाला है इसलिए ऐसा कर रहा था। और आगे ऐसा न करने का वचन दिया। हज़रत अबू हुरैरा को उस पर रहम आया और उेस छोड़ दिया। अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इसकी खबर देदी अतः सुब्ह को जब हज़रत अबू हुरैरा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने खुद हज़रत अबू हुरैरा से रात की घटना के बारे में पूछा, हज़रत अबू हुरैरा ने पूरी बात बता दी और कहा कि उस पर मुझे दया आ गई और मैंने उसे छोड़ दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वह तुम से झूट बोला है वह फिर आए गा। अतएव दूसरी रात वह फिर आया और फिर पकड़ा गया, क्षमा मांगी, और क्षमा दी गई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फिर उसी प्रकार पूछा हज़रत अबू हुरैरा ने सब बता दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फिर फ़रमाया कि वह झूट बोला है वह फिर आएगा ऐसा ही हुआ। तीसरी रात फिर पकड़ा गया। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) ने कहा आज तो तुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आवश्य ले चलूंगा। इस बार उस ने कहा मुझे छोड़ दीजिए मैं आप को कुछ लाभदायक शब्द सिख दूंगा। हज़रत हबू हुरैरा ने कहा बता वह शब्द (कलिमात) क्या हैं ? उसने बताया कि यदि तुम सोते समय आयतुल कुर्सी पढ़ कर सोओ तो अल्लाह तआ़ला की सुरक्षा में हो जाओगे और सुब्ह तक शैतान से सुरक्षित रहोगे अतः हज़रत अबू हुरैरा ने इस बार भी उसे छोड़ दिया। परन्तु जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तो पहले की भांति आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फिर पूछा और हज़रत अबू हुरौरा ने पूरी बात बता दी तथा आयतुलकुर्सी वाली बात भी बता दी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया कि है तो वह झूटा परन्तु आयतुलकुर्सी वाली बात उसकी सत्य है। (हदीस का अर्थ)

इस रिवायत से यह ज्ञात होता है कि शयातीन खाने की चीज़े चुरा लाते हैं और खाते हैं लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसे झूटा बताया अतः सम्भव है कि उसने झूट कहा हो कि खाने की चीज़ की उस को आवश्यकता है। उसको चुराना ही था तो उसने चुराने के लिए रूप क्यों धारण किया? फिर उसे बाग़ से चुराने में क्या रूकावट थी ? साफ लगता है कि वह हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) को केवल परेशान (व्याकुल) करना चाहता था।

कुछ भी हो दूसरी रिवायत से तो यह सिद्ध ही है कि शैतान ऐसे इन्सानों के साथ मिल कर खाता और पीता है जो अल्लाह का नाम लिये बिना खाते और पीते हैं। परन्तु यहां भी यह प्रश्न उठता है कि वह सीधे खाने पीने की वस्तुएं खाते पीते हैं या खाने की वस्तुओं में से कोई विशेष तत्व तथा सूक्ष्म वस्तु खाते हैं।

अनुभव से ज्ञात हुआ कि खाने वाला खाने के बरतन से एक–एक दाना अपने मुंह में डालता है तथा पानी, दूध और शरबत का पूरा गिलास पीता है चाहे काफ़िर हो चाहे मुस्लिम, चाहे उसने बिस्मिल्लाह की हो या ना की हो फिर शैतान उसमें से क्या चीज़ खाता है ?

ऐसा बहुत देखने में आता है कि कोई व्यक्ति अ़जीब अ़जीब हरकतें करता और अजीब बातें भी करता है। लोग कहते हैं इस पर जिन्न है। ऐसा हो तो सकता है परन्तु ऐसा बहुधा किसी बीमारी और कभी मक्र से होता है। पहचानने की कोशिश की जाए।

औरत की आज़ादी या गुलामी की ज़ंजीरें

सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी

यूरोप व अमेरिका में औरत की आज़ादी का आन्दोलन चलाने वाले बड़े ज़ोर व शोर से यह बात कह रहे हैं, कि औरत का अपनी योग्यताओं को घर की चहार दीवारी तक सीमित रखना, घरेलू मसायल में अपने को उलझा देना, अपनी योग्यता का बड़ा हिस्सा खानदानी मामलात निपटाने में लगा देना, खाना पकाने, बच्चों की देख भाल करने, और घर की सफाई सुथराई का प्रबन्ध करने को, अपनी ज़िन्दगी का असल मक़सद समझ लेना, और फिर इससे बाहर निकलने की कोशिश न करना, यह वह बुनियादी चीजें हैं, जिनकी वजह से हमारा वर्तमान समाज वह उन्नति नहीं कर पाता, जो अब तक इस को कर लेना चाहिए था,

उन्नति की राह में जो मर्दों से काम लिया जा रहा है अगर इतना ही काम औरतों से लिया जाता, तो औरतें मर्दों के क़दम में क़दम मिला कर समाज की उन्नति के लिए नज़र आतीं, और घर से बाहर दफ्तरों, अस्पतालों, रेलवे स्टेशनों हवाई अड्डों और दूसरी उन तमाम जगहों पर जहां ज़्यादातर मर्द ही दिखाई देते हैं उन का साथ देतीं, तो उन्नति की राह इससे कहीं ज्यादा तेज़ होती जितनी की आज है।

यह है वह बात जो मग़रिब के लोग बड़े ज़ोर–शोर से कह रहे हैं, परन्तु उसका जवाब भी वहीं की एक औरत ने दिया है जिन्होंने इस आन्दोलन चलाने वालों के साथ बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया था, और इस को कामियाब बनाने के लिए। घर से रिश्ता तोड़ा, बच्चों को नौकर के हवाले किया, अपनी निस्वानियत (स्त्रीत्व) का गला घोंटा, ममता को पैरों तले रौंदा, और आज़ादी हासिल करने, और उन्नति के रास्ते पर चलने के लिए सब कुछ, कर गुज़रने को ठान लिया परन्तु आज़ादी को दिल से मानने वाली, उस औरत को आज़ादी के शौक ने और भी गुलामी की ज़न्जीरों में जकड़ दिया, और उन्नति की राह पर चलने के धोखे में उनकी उन्नति पसंदी ने, कुछ और पीछे ढकेल दिया पहले तो वह शौहर ही की गुलाम थीं, परन्तु अब तो उन्होंने अपनी गर्दनों में तौंक डाला, अपनी विभिन्न ख्वाहिशों के गुलामी का, अपने आफीसर के अधीन रहने का गिरगिट की तरह रंग बदलते रहने, फैशन को अपनाने का। मर्दों को अपने से बेहतर समझने, उनके इशारों पर नाचने, उनके कहने पर अपने आप को मुसीबत में डालने और उनकी महफिलों को सजाने और उन की खुशी के लिए अपनी इज़्ज़त को कुर्बान कर देने का।

उन्नति का यह रास्ता जो उनके दुश्मनों ने दिखलाया था, अपनाने से पहले, वह शौहर के मुक़ाम को जानती थीं, घर की हर ज़रूरत को जानती थीं, मर्द औरत के बीच जो फर्क़ है उसको समझती थीं बच्चों को किस तरीक़े से रखना चाहिए उसको जानती थीं, घर को सही ढंग से रखना उनका काम था, खाना पकाना उनको आता था, सीना परोना भी जानती थीं, अपनी इज्ज़त व आबरू को भी बचाती थीं, नफा व नुक़सान को भी समझती थीं, क्या अच्छा है, और क्या बुरा है, उन्हें पहचानती थीं, ज़िन्दगी के कुछ मैदानों में उन्हें मर्दों से ज्यादा ऊंचा देखा जा रहा था और उन मैदानों में मर्द इस बात को मानते भी थे।

आज़ादी के दग़ाबाज़ नारा से धोखा खाने वाली औरत के दिल की तमन्ना इस खत से बेहतर नहीं हो सकती जो प्रसिद्ध फिल्म अदाकार "मारलेन मोनरिद" ने अपनी उस सहेली को लिखा है जो उसकी उन्नति को देख कर इरादा कर रही थी फिल्मी दुनिया में आने का यह खत मारलेन मोनरिद की आत्म हत्या के बाद, उसके सामान की तलाशी में मिला था।

"मारलेन मोनरिद अपनी दोस्त को लिखती हैं कि मेरी चमक दमक को और ठाठ बाट को देख कर तुम धोखा मत खाओ, इस दुनिया में मुझ से बुरी और बदनसीब औरत शायद ही कोई हो? मेरी इच्छा थी, मां बनने की परन्तु मैं न बन सकी, मेरी इच्छा थी, कि मेरे घर के आंगन में शोर हो बच्चों का, परन्तु घर का सूनापन मुझ को डसता रहा, मैं एक अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारना चाहती थी जिसमें पति का प्यार हो, और माता पिता का प्यार हो, भाई बहनों से अच्छी अच्छी बातें हों, परन्तु मेरी यह इच्छा पूरी न हो सकी, अब मैं इस दुनिया से विदा हो रही हूं अतः यह दुनिया मुझे काटे खा रही है, और जाते–जाते मैं तुमको नसीहत

करना चाहती हूं कि आज़ादी की इस दुनिया में कभी क़दम न रखना और एक सादा सुकून, सन्तुष्ट और घरेलू ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करना, औरत की यही सबसे बड़ी कामियाबी है।"

आज़ादी का यह नारा इस रिपोर्ट से और खुल जाता है जो "सूइडन" की एक जज औरत "ब्रिजदार ओलिफहामिर" ने पूर्वी एशिया के अपने दौरे के बाद पेश की।

"पश्चिम में औरत की आज़ादी एक ख़याली चीज़ है, क्योंकि पश्चिम ने सच्चाई की दुनिया में कभी औरत को मर्द के बराबर हुकूक़ नहीं दिये हैं, पश्चिम ने अगर कुछ किया है तो सिर्फ यह किया है कि औरत को उसकी निस्वानियत (स्त्रीत्व) की विशेषता से आज़ाद करके, उसको ऐसा बना दिया जो मर्द के क़रीब हो गयी है।"

औरत की आज़ादी पर "अर्ट लोकवाल्ड" ने अमेरिका से निकलने वाला अखबार "हीराल्ड ट्रीबून" में लिख है, जो उन्नति पसन्द और आज़ादी की चाहने वाली औरतों को आंखें खोलने के लिए काफी है, वह कहते हैं कि –

"हर आज़ाद औरत के पीछे एक गुलाम औरत नज़र आती है जो इसके बदले, उस का काम काज संभालती है।"

"लोक्वाल्ड" ने यह बात इस इन्टर व्यू के बाद कही, जो उन्होंने एक वकील औरत से, जो एक अदालत से सम्बन्ध है, लिया था और जिसमें उन औरत ने यह एतिराफ़ किया था, कि अगर उनके घर में नौकरानी न होती जो उनके न रहने पर, घर को संभालती है, बच्चों की देखभाल करती है, खाने आदि का प्रबन्ध करती है, घर को साफ करके उसको रहने के लायक़ बनाती है, तो वह बाहर काम नहीं कर सकती थी, उन वकील साहब ने बाद में बड़ी मेहनत से कमाई हुई रक़म (तनख्वाह) में से जिसके लिए उन्होंने बच्चों को छोड़ा, आधी रक़म अपनी उस नौकरानी को तनख्वाह के तौर पर देती हैं।

"लोकवाल्ड" ने वकील साहबा के इस एतिराफ़ पर आलोचना करते हुए कहा, कि आप से बात चीत करने से पहले मेरा ख्याल यह था कि आज़ाद औरत आज़ादी के अपने तजुर्बा में कामियाब रही है, और इस तजुर्बा की दअवत दूसरी औरतों को भी दी जा सकती है, परन्तु आप की बात चीत करने से पहले मेरा ख़याल यह था कि आज़ाद औरत आज़ादी के अपने तजुर्बा में कामियाब रही है और इस तजुर्बा की दअवत दूसरी औरतों को भी दी जा सकती है, परन्तु आप की बात चीत ने मेरी यह राय बदल दी, और आज़ादी की जो तस्वीर मेरे दिमाग़ में बनी थी उस पर कालिक पोत दी, और अब मैं यह कहने पर मजबूर हूं कि अगर "जवान्ना" (वकील औरत की नौकरानी) की खिदमात आप को हासिल न होतीं तो आप कभी आज़ाद न हो सकती थीं, अगर यह कहा जाये कि एक औरत की आज़ादी के लिए दूसरी औरत का गुलाम बनाना ज़रूरी है तो ग़लत न होगा।

(ब्रिजदार औलफ हामिर)

औरत की आज़ादी पर यह आलोचना किसी आलिमे दीन की नहीं बल्कि बर्तानिया के प्रसिद्ध अदाकारह "मारलेन मोनरिद" सूइडन की प्रसिद्ध औरत जज, और अमेरिका के चोटी के अर्ट लोकवाल्ड के हैं, जिन्होंने आज़ादी की इस दुनिया में आंख खोली, इस दुनिया में परवरिश पायी, इसी दुनिया की दूसरों को दअवत दी, परन्तु अन्त में उसी नतीजा पर पहुंचे जिस नतीजा का एलान चौदह सौ साल पहले एक नबी उम्मी "ह० मुहम्मद सल्ल०" की ज़बान से हो चुका है।

काश ! कि हमारी बहनें आज़ादी की ज़ख्म खाई हुई इन औरत से शिक्षा लें, और इस आज़ादी के विरुद्ध जो वास्तव में उनको फिर से गुलाम बनाने की कोशिश है आवाज़ उठाएं, और अपनी दूसरी बहनों को उसके नुक़सानात से जानकारी कराने की पूरी कोशिश करें। जिससे समाज एक उन्नतिशील स्वस्थ समाज बन सके।

मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड की अपील

मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड तमाम मुसलमानों से अपील करता है कि वह शरीअत के आदेशों को अपनाएं। इस्लाम में समाजी व खान्दानी ज़िन्दगी में जिन जिन लोगों के हुकूक नियुक्त किये गये हैं उनको अदा करने में कोई कोताही न करें। यदि किसी मुआमले में मतभेद या झगड़ा हो जाये तो शरअी पंचायत (दारुल क़ज़ा) में पेश करें और वहां से जो आदेश मिले उस को दिल से मान लें। इसमें अल्लाह की रज़ा और आख़िरत की भलाई भी है। और धन के भारी खर्चे से बचत भी।

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न — *दुरुदताज पढ़ने का क्या हुक्म है ? हमारे यहां इसका बहुत रिवाज है एक साब इसे विदअत कहते हैं क्या उनका कहना सही है?*

उत्तर : दुरूदताज के शब्द कुर्आन मजीद और हदीस शरीफ़ के नहीं हैं, और सहाब–ए–किराम या तबअ़ि, ताबिअ़ीन आदि से दुरुद ताज पढ़ना साबित नहीं है।

दुरूदताज हुजूर (सल्ल०) के सैकड़ों बरस बाद की ईजाद है। जिस दुरूद शरीफ़ के शब्द, हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने सहाब–ए–किराम को सिखलाए हैं (जैसे दुरूदे इब्राहीम आदि) कोई दूसरा दुरूद जिसके शब्द, नये ईजाद किये हों, सवाब में उसका मुक़ाबला नहीं कर सकते।

हुजूर की ज़बान मुबारक से निकले हुए शब्द और किसी उम्मती के ईजाद किए हुए शब्दों की बरकत में ज़मीन आसमान का अन्तर है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के सिखाए हुए शब्दों में जो बरकत है वह दूसरे में नहीं है, और अगर वह दूसरे शब्द सुन्नत के खिलाफ़ भी हों, तो फिर तो ऐसा ही अन्तर हो जाता है, जैसे रोशनी और अंधेरे का अन्तर होता है।

हदीस शरीफ़ में हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने किसी सहाबी को एक दुआ सिखलाई जिसमे "आमन्तु बिकिताबिकल्लज़ी अन्ज़ल्त व नबिय्यिकल्लज़ी अरसल्त" के शब्द हैं सहाबी ने तअ़ज़ीमन नबी के स्थान पर रसूल शब्द कह दिया अर्थात "नबिय्यिकल्लज़ी के स्थान पर "रसूलिकल्लज़ी" कहा तो आप सल्ल० ने तुरन्त टोका, और उनके सीने पर हाथ मार कर फ़रमाया! यह कहो "नबीय्यिकल्लज़ी अर्सल्त" अर्थात नबी के शब्द को ही यहां पढ़ने का हुक्म दिया जो आपकी ज़बान मुबारक से निकला हुआ था। (तिर्मिज़ी भाग २)

दुरूदताज के फज़ाइल जो (जाहिल) लोगों में मशहूर हैं उसकी कोई हक़ीकत नहीं, इस लिए कि यह हुजूर सल्ल० की वफ़ात के सैकड़ों साल बाद का ईजाद किया हुआ है और जिसकी फज़ीलत और सवाब हुजूर ने न बताया हो, तो वह कैसे पढ़ा जा सकता है?

जिस दुरूद के शब्द हदीस शरीफ़ से साबित हैं उन्हें छोड़कर गैर मस्नून शब्दों पर बड़े–बड़े सवाब के वादों का अक़ीदा रख कर उसका वज़ीफ़ा ज़रूरी समझ लेना बिदअ़त है और इस में पढ़े जाने वाले शब्द जैसे "दाफ़ि उल्बला" को अवाम नहीं समझेंगे कि यह शब्द अल्लाह के लिए प्रयोग हुआ है या मुहम्मद (सल्ल०) के लिए अवाम मुहम्मद (सल्ल०) के लिए समझ कर गुमराह होंगे। इस लिए इस के पढ़ने का हुक्म देना उनको शिर्क में उलझाना और सुन्नत से दूर करता है।

प्रश्न : *कुछ लोग मुसाफ़हा कर के अपने हाथों को चूम लेते हैं। या सीने से लगाते हैं ऐसा करना कैसा है?*

उत्तर : इसकी कोई अस्ल दीन में नहीं है जिहालत का नतीजा है और मकरूह है। (शामी भाग ५ पेज ३३७)

प्रश्न : *कुछ लोग नमाज़ पढ़ने के बाद जानमाज़ का कोना मोड़ देते हैं और कहते हैं, वरना शैतान पढ़ेगा यह अक़ीदा रखना कैसा है ?*

उत्तर : इस तरह के रिवाज की कोई हकीक़त नहीं है दीन में, और यह अक़ीदा बिल्कुल ग़लत है।

प्रश्न : *मुसाफ़हा कब करना मसनून है और कब करना बिदअ़त है?*

उत्तर : मुसाफ़हा हदीस से साबित है और उसकी बड़ी फज़ीलत आई है, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का इर्शाद है। "जब दो मुसलमान मिलकर आपस में मुसाफ़हा करें तो उनके अलग होने से पहले ही उनकी बख़्शिश हो जाती है। (तिर्मिज़ी भाग २–६७)

इससे साबित हुआ कि मुसाफ़ह मुसलमानों की आपसी मुलाक़ात के वक़्त बाद सलाम के मसनून है और चूंकि मुसाफ़ह सलाम को मुकम्मल करता है इसलिए सलाम के बाद होना चाहिए।

मुलाक़ात के शुरू में अर्थात जैसे ही मुलाक़ात और सलाम व जवाब हो उस वक़्त के अलावह दूसरे वक़्त, जो मुसाफ़हे किये जाते हैं जैसे नमाज़ फज्र व नमाज़ अस्र व नमाज जुमुअः

या नमाज़ ईदैन आदि के बाद जो मुसाफ़हा किया जाता, और उसको सुन्नत समझा जाता है, यह ग़लत है।

हां लोगों के हालात को देखते हुए फ़ित्ना से बचने के लिए उलमा ने यह भी फरमाया है कि अगर कोई मुसाफ़हा के लिए हाथ बढ़ाए तो अपना हाथ खींचकर ऐसी शक्ल न पैदा करनी चाहिए कि उसको बदगुमानी, शिकायत और रंज हो। (शरह मिश्कात भाग ४)

प्रश्न : कुछ लोग हर साल रबीउस्सानी में हज़रत शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) की ग्यारहवीं के नाम से बड़ी धूम धाम मनाते हैं इसका क्या हुक्म है ?

उत्तर : बेशक शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) एक बड़े बुज़ुर्ग हैं जिनकी वफ़ात ५४१ हि० में हुई जिनकी अज़मत व मुहब्बत ईमान वाले को होनी चाहिए।

अहले सुन्नत वल्जमाअ़त का अक़ीदा है कि तमाम मखलूक में नबियों का दर्जा सबसे बड़ा है, और नबियों में सब से अफ़ज़ल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हैं, फिर पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०), फिर उमर फ़ारूक (रज़ि०) फिर उस्माने ग़नी (रज़ि०), और फिर हज़रत अ़ली (रजि०), उनके बाद अशर–ए–मुबश्शरा (जिन के सम्बन्ध में हुज़ूर सल्ल० ने जन्नत की बशारत दी है।) उनके बाद बाक़ी अहले बद्र व अहले उहद, मुहाजिरीन व अन्सार आदि सहाबा का दर्जा है, उनके बाद ताबिअ़ीन और तबअ़ि ताबिअ़ीन का है।

हक़ीक़त पर ग़ौर कीजिए कि नबियों और सहाबा जैसी हस्तियों के "वफ़ात के दिन मनाने की शरीअ़त ने जब कोइ ताकीद नहीं की तो हज़रत अब्दुल कादिर जीलानी रह० का "यौमे वफ़ात" मनाने का क्या मतलब है ?

दिन मनाना हर एक के लिए सम्भव नहीं, क्योंकि दर्जे के अनुसार सबसे पहले नबियों की, फिर सहाबा और उनके बाद दूसरे बुज़ुर्गों की, बारी आती है, नबी और सहाबा हज़ारों की संख्या में हैं, और साल के कुल दिन तीन सौ चौव्वन या साठ हैं तो हर एक का मनाने के लिए दिन कहां से लाएंगे और नबियों और सहाबा को छोड़ कर उनसे कम दर्जा वाले बुज़ुर्गों के दिन मनाए जाएं तो यह नबी और सहाबा की तौहीन होगी।

"हदीस शरीफ में है कि हर एक से उसके दर्जा के अनुसार मामला करो।"

इस तरह मनाना बिदअ़त है और किस्सा यह है कि शेख अब्दुल कादिर जीलानी (रह०) की तारीख वफ़ात में बहुत इख्तिलाफ़ है "तफरीहुल्खातिर फ़ी मनाक़िबे शेख अब्दुलकादिर" में वफ़ात के सिल्सिले में आठ तारीखें कही गई हैं जैसे–नवीं दसवीं, तेरहवीं, आठवीं, सातवीं, ग्यारहवीं रबीउलअव्वल इसके बाद लिखते हैं कि सही दसवीं रबी उलव्वल है।

(बुस्तानुल मनाज़िर पेज ११३)

इस से मालूम हुआ कि शेख के खुलफ़ा और मुरीदीन ने भी तारीखे वफ़ात और दिन व माह को निश्चय करके नहीं मनाया, वरना इतना इख्तिलाफ़ न होता, और जहां तक ईसाले सवाब का सम्बन्ध है तो जाइज तरीके पर बिना तारीख व दिन निश्चित करके जब चाहें जो चाहें सदक़ा कर सकते हैं।

(पृष्ठ २८ का शेष)

पुस्तक हतोप्दश का अनुवाद फ़ारसी में "मुफ़र्रिहुलक़ुलूब" के नाम से किया और हुमायूं के नाम से समर्पित किया (फ़ेहरिस्त मखतूतात फ़ारसी इंडिया आफ़िस लाइब्रेरी कालम ११०३) मुहम्मद गुवालियारी ने संस्कृत की दूसरी प्रसिद्ध पुस्तक "अमृत कुन्ड" का अनुवाद फ़ारसी में "बहरुलहयात" के नाम से किया। इसमें ब्राह्मणों की धार्मिक आस्था और दार्शनिक (फलसफ़ियाना) विचारों पर बहस है।

(मुसलमान हुक्मरानों की मज़हबी रवादारी)

0522-508982
Mohd. Miyan
Jwellers
एक भरोसेमन्द सोने चान्दी के जेवरात की दुकान

0522-508982
अनस
मैरेज हाल
बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हमसे सम्पर्क करें ।
कपूर मार्केट (मलिक मार्किट)
विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

मुस्लिम शासन में न्याय का विस्तार

डा० मु० इज्तिबा नदवी

न्याय राष्ट्रों के अस्तित्व के बने रहने, उनकी उन्नति, सुख व शान्ति, समाज में सन्तुष्ट और सदभाव का साधन होता है। जिस किसी राष्ट्र ने, जिस समाज ने जिस प्रणाली ने न्याय से मुंह मोड़ा और अन्याय से काम लिया, वह तबाह व बर्बाद हो गया और अल्लाह के प्रकोप व नाराज़गी का शिकार हो गया। एक पुरानी कहावत चली आ रही है कि कौमें उस समय तक जीवित रहती हैं और फलती फूलती हैं जब तक उनमें न्याय क़ाइम रहता है। न्याय के ही द्वारा हक़दारों को उनका हक़ मिलता है और समाज को सुख चैन प्राप्त होता है। इसीलिए आसमानी सन्देशों के महत्वपूर्ण उद्देश्यों से न्याय की स्थापना को प्रमुखता प्राप्त रही है। अल्लाह का इर्शाद है :

'और जब लोगों के बीच निर्णय करो तो न्याय के साथ निर्णय करो'

और रसूलुल्लाह का फरमान है

'और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय के साथ निर्णय करूं।'

इस लेख में हम कुछ पंक्तियां अब्बासी ख़लीफा महदी बिन अबी जाफर मन्सूर के द्वारा नियुक्त किये हुए काज़ी शरीफ बिन अब्दुल्लाह नजफ़ी की अदालत पर लिख रहे हैं। बड़ी मुश्किल और बहुत ही कहने सुनने से क़ाज़ी शरीफ ने अबू जाफ़र मन्सूर की विनती पर कूफ़ा के क़ाज़ी का पद स्वीकार किया था। कुछ घनिष्ट मित्रों और ख़लीफ़ा तक पहुंच रखने वाले अधिकारियों के माध्यम से कोशिश भी की इस उत्तरदायित्व से मुक्ति मिल जाए। मगर अबू जाफर और उसके बाद मेहदी ने पसन्द न किया कि इस दौर का इतने बड़े विद्वान, धर्मशास्त्री, न्याय के रक्षक, खुदा की राह में किसी की आलोचना से न डरने वाले गुणवान और निर्भीक व्यक्ति की सेवा से लाभ न उठाया जाए। वे जानते थे कि जब सच बात कहनी होगी तो वे बड़े से बड़े अधिकारी के सामने नहीं झिझकते। अतः ऐसे प्रतिभावान की योग्यता के लाभ से समुदाय को वंचित नहीं रखा जा सकता।

क़ाज़ी शरीक बुखारा में ६५ हिजरी में पैदा हुए । वहीं आरम्भिक शिक्षा प्राप्त की। फिर उनके चचा उन्हें कूफ़ा ले आए और कुछ ही समय के बाद कूफ़ा और बग़दाद के विशिष्ठ विद्वानों में उनकी गिनती होने लगी।

आइए देखिए, वह अदालत में बैठे हुए हैं। उस दिन का आख़िरी मुक़दमा उनके सामने पेश है। फैसला करके उठना चाहते हैं कि एक महिला अदालत में उनके कक्ष में दाख़िल होती है। चाल ढ़ाल और रख रखाव से लगती है कि बहुत डरी हुई है। आने का उद्देश्य पूछे जाने पर शरीक के सामने खड़े होकर हल्की आवाज़ में कहती है : मैं अल्लाह से फिर उसके बाद आपसे, ऐ पीड़ितों व असहायों को अत्याचार से छुटकारा दिलाने वाले काज़ी साहब, न्याय चाहती हूं।'

काज़ी ने पूछा तुम पर किसने अत्याचार किया है ? उस महिला ने जवाब दिया कूफा के अमीर और अमीरूल मोमिनीन महदी के चचेरे भाई मूसा बिन ईसा ने।

काज़ी ने कहा : पूरी बात साफ साफ बताओ।

उस महिला ने बताया : फ़ुरात नदी के किनारे मुझे अपने बाप से विरासत में एक बाग़ मिला था। उसमें खजूर के पेड़ों के अलावा खेती भी होती है। मैंने उस बाग़ को अपने भाइयों और बहनों में बांट दिया था और उनके और अपने बाग़ के बीच एक दीवार बना ली थी। मैंने एक फारसी व्यक्ति को, जो बाग़बानी और खेती बाड़ी के काम में माहिर था, अपना कारिन्दा रख लिया। उस आदमी ने मेरे बाग़ में कड़ी मेहनत की जिस कारण मैं बाग़ से काफी मात्रा में अनाज और खजूर प्राप्त कर लेती जिस से अपना व अपने बच्चों का पेट पालती हूं। कुछ समय पहले अमीर मूसा बिन ईसा ने मेरे भाइयों का बाग़ खरीद लिया और मुझे भी लालच दिया, मगर मैं अपना बाग़ बेचने पर तैयार न हुई। अमीर गुस्सा हुआ और उसने मुझे धमकी दी। मगर मैं फिर भी उसकी धमकी से न डरी।

"आज रात उसने अपने पांच सौ गुलामों और कारिन्दों को भेज कर मेरी दीवार गिरवा दी और उसके चिन्ह भी इस तरह मिटा दिए कि मेरे और उसके पेड़ व खेत मिल गए हैं और

पहचानना और फर्क करना मुश्किल हो गया।

काज़ी ने उसी समय आदेश लिखा : 'बाद सलाम, ख़ुदा अमीरूल मोमिनीन को ठीक ठाक रखे अपनी नेमतों से माला–माल करे, मेरे पास एक महिला आयी और उसने बताया कि अमीर ने कल उस का बाग़ बलपूर्वक हथिया लिया है, इसलिए अमीर इसी समय अदालत में हाज़िर हों या अपना वकील बनाकर भेजें। वस्सलाम'

अ़दालत के चपरासी को यह पत्र सीलबन्द करके देकर अमीर मूसा बिन ईसा के पास भेजा । अमीर ने पत्र पढ़ा तो क्रोध से लाल हो गया और चपरासी को आदेश दिया कि तुरन्त कोतवाल शहर को बुलाकर लाओ।

कोतवाल आया तो अमीर ने उसे आदेश दिया : क़ाज़ी शरीक के पास जाओ और उनसे मेरी ओर से कहो कि तुम्हारा अ़जीब हाल है कि एक पागल महिला के मेरे विरुद्ध दावा करने पर मुझे अ़दालत में हाज़िर होने को कहते हो, जबकि उसका दावा सही नहीं है।'

कोतवाल ने पूछा: क्या क़ाज़ी साहब ने निर्णय दे दिया है?

अमीर ने कहा कि यही क्या कम है कि मैं उस महिला के साथ अ़दालत में खड़ा किया जाऊं।

कोतवाल ने कहा कि अमीर की बड़ी कृपा होगी मुझे इस काम से क्षमा दें। आप को मालूम है कि क़ाज़ी साहब का फ़ैसला अटल होता है।

अमीर ने क्रोधित होकर कहा: ख़ुदा तुम्हारा नाश करे, तुम बिना संकोच जाओ।

कोतवाल असमंजस का शिकार था कि अब क्या करे। फिर सोचा कि यदि मैंने अमीर का सन्देश काज़ी साहब को पहुंचा दिया, तो मुझे भला क्या नुक़सान पहुंचेगा लेकिन यदि अमीर से इनकार करता रहा तो अवश्य ही नुकसान उठाना होगा। यह शंका ज़रूर रही कि क़ाज़ी साहब कहीं उसे भी अमीर के अपराध में शरीक न समझें।

उसने अपने सेवकों को निर्देश दिया कि कुछ ओढ़ने बिछाने और खाने पीने का सामान जेल में पहुंचा दिया जाए। इसके बाद क़ाज़ी की अ़दालत में पहुंचा और पूरे सम्मान के साथ अमीर का सन्देश उनको पहुंचाया। वह घबराया हुआ था क्योंकि उसे पता था कि वह एक ग़लत काम के लिए भेजा गया है।

काज़ी साहब ने कोतवाल से कहा: मैंने अमीर को अ़दालत में बुलाया तो उसने तुम्हारे द्वारा ऐसा सन्देश भेजा है जिसका न्याय से कोई भी सम्बन्ध नहीं। तुम्हारा इस मामले से क्या संबंध है और तुम क्यों आए हो? क़ाज़ी साहब ने अ़दालत की पुलिस को आदेश दिया कि कोतवाल को जेल में बन्द कर दें।

कोतवाल ने यह आदेश सुनकर कहा कि खुदा की कसम मुझे इसका पता था कि आप मुझे जेल भेजेंगे इसलिए मैं अपना पूरा प्रबन्ध करके आया हूं।

अमीर मूसा को कोतवाल की गिरफ्तारी की सूचना मिली तो उसने अपने दरबान से अदालत में कहला भेजा कि कोतवाल तो मेरा सन्देश ले गया था उसका कोई दोश नहीं ?

काज़ी साहब ने दरबान को भी जेल भिजवा दिया। अमीर मूसा को दरबान की गिरफ्तारी की सूचना मिली तो उसने अस्र की नमाज़ पढ़कर इसहाक़ बिन अश्शी और कूफ़ा के दूसरे बड़े लोगों को बुलवाया और उनको काज़ी साहब के आदेश और अपने दोनों एलचियों के जेल भेजे जाने की कथा सुनाई और कहा कि मैं सामान्य लोगों में से नहीं कि वह मेरे साथ सामान्य अपाराधियों जैसा व्यवहार करें।

क़ाज़ी साहब जब अ़स्र की नमाज़ अदा करके अपनी अ़दालत में पहुंचे तो कूफा के ये बड़े लोग भी पहुंच गए और उन्होंने अमीर की शिकायत क़ाज़ी साहब को पहुंचायी। साथ ही अमीर की सिफ़ारिश में कुछ ऐसी बातें भी कहीं जिनसे उनका विचार था कि क़ाज़ी साहब कुछ नर्म पड़ जाएंगे।

क़ाज़ी साहब ने उनसे कहा : आप लोग एक ऐसे मामले में सिफारिश करने आए हैं कि जिसमें मैं हक़ और इन्साफ़ के सिवा कुछ नहीं कर सकता। क्या अ़दालत सामान्य जनता की समस्याएं हल करने के लिए नहीं बल्कि उनके विरुद्ध फ़ैसला करने के लिए स्थापित की गयी है ? न्याय के मामले में छोटे, बड़े में कोई भेद–भाव नहीं कर सकता। मुझे इस समय हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि का वह ऐतिहासिक फैसला याद आ रहा है, जो उन्होंने हैरह के शासक जबला से उस समय फ़रमाया था जब उसने काबा के तवाफ़ के दौरान एक व्यक्ति को थप्पड़ मारा, क्योंकि उसका पांव उसकी उंगली पर पड़ गया था। हज़रत उमर रज़ि० ने फैसला किया कि वह व्यक्ति जबला को उसी तरह थप्पड़ मारे, तो जबला ने कहा था: मैं तो एक सरदार

हूं और वह एक सामान्य आदमी है, यह कैसे हो सकता है कि वह मुझ से बदला ले?

उस समय हज़रत उमर रज़ि० ने फरमाया थाः इस्लाम ने तुम दोनों को एक बराबर कर दिया है।'

इसके बाद काज़ी साहब ने मुहल्ले के युवकों को बुलाया और निर्देश दिया : इनमें से हर एक का हाथ पकड़ कर जेल पहुंचा दो। उन्होंने कूफ़ा के सरदारों से कहाः तुम सब फ़सादी हो और एक ज़ालिम के साथ सहयोग करने वाले और उसके सिफारिशी हो। इसलिए तुम्हारा ठिकाना जेल है। अतः वे सब के सब जेल पहुंचा दिए गए।

अब अमीर मूसा को इस घटना की सूचना मिली तो वह घबरा गया। लेकिन रात के अंधेरे में अपने नौकरों के साथ स्वयं जाकर जेल का दरवाज़ा खोल दिया और सब को जेल से बाहर निकाल लाया।

सुबह जेल के दरोगा ने क़ाज़ी को अ़दालत में जाकर सूचित किया तो काज़ी साहब ने अपनी किताबों का थैला मंगवाया और उसे अपने घर भिजवा दिया। सेवक से कहा कि सामान उठाओ बग़दाद चलते हैं। खुदा की क़सम हमने बनू अ़ब्बास से यह चीफ़ जस्टिस का पद मांगा नहीं था। उन्होंने हमसे स्वयं ही इस पद को स्वीकार करने की विन्ती की थी और हमें आज़ादी से फ़ैसला करने की ज़मानत दी थी, मगर अब इसके बाद आज़ादी ख़त्म हो गयी। अतः वे बग़दाद के लिए चल दिए।

अमीर को उसके जासूसों ने खबर दी तो हैरान व परेशान होकर क़ाज़ी साहब की सेवा में हाज़िर हुआ और डरा कि यदि ख़लीफ़ा मेहदी को इस घटना का पता चल गया तो उसकी ख़ैरियत नहीं। अतः उसने क़ाज़ी साहब से अपनी सारी ग़लतियों की मुआ़फ़ी मांगी। क़ाज़ी साहब ने कहा : क़ैदियोंको वापस जेल भिजवाओ और अ़दालत में मुक़दमा के लिए हाज़िर हो, तो मैं वापस आ सकता हूं। अमीर ने क़ाज़ी साहब की सारी बातें मान लीं और अ़दालत में हाज़िर हो गया। काज़ी साहब ने दावा करने वाली महिला को बुलाया और कहा दूसरा वादी हाज़िर हो गया है।

अमीर ने क़ाज़ी साहब से कहा : अब तो मैं हाज़िर हो गया हूं, इसलिए क़ैदियों की रिहाई का आदेश दे दें। क़ाज़ी साहब ने सारे कैदियों को रिहा करने का आदेश दिया और अमीर से पूछा कि क्या इस महिला का दावा सही है?

अमीर ने कहा : हां महिला सच्ची है।

तो आपने जो कुछ लिया है वह उसे वापस कर दें और जल्दी से उसके बाग़ की दीवार भी बनवा दें।

अमीर ने जवाब दिया : कि मैं यह काम भी क़रा दूंगा।

क़ाज़ी साहब ने उस महिला से मालूम किया कि क्या और कुछ भी बाक़ी है ?

उसने जवाब दिया कि उस फ़ारसी का घर और उसका सारा माल व सामान।

अमीर ने कहा : मैं उसकी भी क्षतिपूर्ति कर दूंगा।

क़ाज़ी साहब ने औ़रत से पूछा कि क्या और कुछ भी अभी बाक़ी है ?

महिला ने जवाब दिया नहीं, अल्लाह आपको नेकी प्रदान करे। क़ाज़ी साहब ने उस महिला को वापस कर दिया और आदर के साथ अमीर के सामने खड़े हो गए और अमीर कूफा को अपनी कुर्सी पर बिठाया, सलाम किया और पूछा कि आपका कोई हुक्म है ?

अमीर ने जवाब दिया : भला मैं आपको क्या हुक्म दे सकता हूं ? और हंस पड़ा।

क़ाज़ी साहब ने फ़रमाया : अमीर साहब! वह (मुक़दमे की कार्यवाही और फरयादी को इन्साफ दिलाना) इस्लाम का आदेश है, शरीअ़त को लागू करने का मामला था और यह (आपके सामने आदर से खड़ा हो जाना और अपनी कुर्सी पर बिठाना) गवर्नर कूफा के मान सम्मान का हक़ है।

गवर्नर उठकर खड़ा हो गया और कहाः जो खुदा के आदेश का पालन व सम्मान करता है अल्लाह तअ़ाला उसके सामने अपनी प्रजा के बड़े बड़ों को झुका देता है।

मैं पशु–पक्षी का नेता होता

अगर मैं–
मैनेजर होता चिड़िया घर का
तो मुझे भी नेता बनने का
सौभाग्य प्राप्त होता।
फिर मैं, इन पशु–पक्षियों की
भूख की समस्या को
सुलझाने के बदले
सिर्फ़ इन्हें भाषण देता।
अगर कोई पशु–पक्षी इन दिनों मर जाता
तो उसके पास जाकर
अपने घड़ियाली आंसू बहाता।
फिर उसके परिवार को
सरकारी ख़ज़ाने से
हज़ार–दो हज़ार रूपये
दिलवा देता।

डा० सूरज मृदुल

हुमायूं की धार्मिक सहनशीलता

सै० सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

हुमायूं को जमकर हिन्दुस्तान में शासन करने का अवसर नहीं मिला परन्तु यह घटना बयान करने के योग्य है कि जब वह हिन्दुस्तान की सल्तनत खोकर ईरान में ठहरा हुआ था तो ईरान के बादशाह ने उससे एक अवसर पर पूछा कि देश के लोगों ने क्यों उसका साथ नहीं दिया ? हुमायूं ने जवाब दिया कि अधिकतर लोग अन्य ध र्म के मानने वाले हैं उनसे मेल जोल सम्भव न हो सका। यह सुनकर शाह ईरान ने फिर पूछा कि हिन्दुस्तान में कौन से गिरोह निर्णायक हैं ? हुमायूं ने उत्तर दिया कि अफ़ग़ान और राजपूत। शाह ईरान ने फिर पूछा क्या इन दोनों गिरोहों में आपसी निःस्वार्थता व मित्रता है? हुमायूं ने कहा "नहीं"। फिर शाह ने कहा खुदा की मदद से आप का शासन हिन्दुस्तान में फिर स्थापित होजाए तो अफ़गानों को व्यापार और दस्तारी में लगा दें और राजपूतों को दिलासा और प्रेम पूर्वक अपने साथ शामिल करलें क्योंकि इनका दिल जीते बिना शासन करना कठिन होगा। हुमायूं को तो राजपूतों के साथ मेल जोल बढ़ाने का अवसर नहीं मिला लेकिन अकबर ने इस पर अमल करके दिखा दिया।

डा० एस०के० बनर्जी ने अपनी पुस्तक "हुमायूं बादशाह में उसके धार्मिक विश्वास पर व्याख्या करते हुए लिखा है कि वह सुन्नी और इमाम अबूहनीफ़ा का अनुयायी था लेकिन दूसरे मत वालों के साथ बड़ी सहनशीलता से व्यवहार करता था। उसके साथ शीया और ईरानी सरदार रहे। इसलिए वह शीया मत की ओर झुक गया था . ..... उसकी अंतरआत्मा शायद इस कारण भी सन्तुष्ट रही कि बाबर ने एक अवसर पर समरक़न्द की मस्जिद के मेम्बर पर शीयों को खुतबा पढ़ा था। फिर वह अपने बाप की ही तरह शीयों के इमामों की इज़्ज़त करता था। उसका झुकाव अपनी हिन्द प्रजा की तरफ भी रहा। उसके बाप की यह भी नसीहत थी कि गाय के ज़बीहा पर प्रतिबन्ध लगा दे तथा मन्दिरों को न तोड़े। इस नसीहत ने उसको सन्तुलित बना दिया था। इसलिए वह सामान्य हिन्दुओं और राजपूतों की रियास्तों से अच्छे सम्बन्ध रखता था। उसकी चौसा में प्राजय हुई तो वापसी के समय एक हिन्दू राजा बीरभन ने उसकी सहायता की। फिर अमर कोट रियासत ही में अकबर पैदा हुआ। मालदेव तो हुमायूं की सहायता के लिए तैयार हो गया था लेकिन राजनीतिक परिस्थिति बदल गई ते वह मदद न दे सका। सेरशाह ने मालदेव पर इसलिए हमला किया कि उसने हुमायूं का साहस बढ़ाया था।

चित्तोड़ पर जब गुजरात के बहादुरशाह ने हमला किया तो महाराजा सांगा की विधवा रानी करनावती ने हुमायूं को राखी भेज कर अपना राखीबन्द भाई बना लिया। वह बंगाल की जंग छोड़ कर चित्तौड़ की तरफ रवाना हुआ। यद्यपि वह उस समय पहुंचा जब रानी की मृत्व हो चुकी थी। परन्तु हुमायूं ने बहादुरशाह को हरा कर यह क्षेत्र रानी करनावती के पुत्रों के लिए सुरक्षित कर दिया। टाड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में इस घटना को बड़े जोशोखरोश के अन्दाज़ में लिखा है कि किस तरह हुमायूं अपनी राखी बन्द बहन की मदद को पहुंचा। वह तो यहां तक लिख गया कि अकबर जहांगीर ने उदैपुर से सम्बन्ध राजपूतों की परम्पराओं के अनुसार क़ाईम रखे। वह यह भी लिखता है कि औरंगज़ेब ने अपने शासन काल में उदैपुर की रानी को जो पत्र लिखे, उनमें से दो उसके पास हैं। उनमें लेखनशैली के मृदुल व पवित्र नमूने के साथ राजपूतों से सम्बन्ध की परंपरा भी बरक़रार है। वह महारानी को प्रिय नेक स्वभाव वाली बहन कह कर सम्बोधित करता है और उसकी कुशलता का इच्छुक है (टाड भाग १ पृष्ठ–२४२, २४३) हुमायूं ने महारानी वरनावती के साथ जो व्यवहार किया वह अब ड्रामों और कहानियों का विषय बना हुआ है यद्यपि वर्तमान युग के बाज़ इतिहासकार इस घटना को कुछ और रंग देकर इसके मनोभाव को समाप्त करना चाहते हैं।

मुसलमान विद्वान दिन प्रतिदिन हिन्दुओं के ज्ञान और शिल्पकला की तरफ़ झुकते जा रहे थे। हुमायूं के ही शासनकाल में ताजुद्दीन मुफ्तीयुलमुमालिक ने संस्कृत की प्रसिद्ध

(शेष पृष्ठ २४ पर)

शहद आहार भी दवा भी

अफ़ज़ल नासिर खां

शहद प्रकृत के कारखानों की एक अति लाभदायक और विचित्र पैदावार है। यह न केवल एक आहार है बल्कि कई गम्भीर रोगों का उपचार भी है। प्राचीन काल से ही इसे आजतक दवा और आहार दोनों रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। प्रसिद्ध यूनानी विद्वान और हकीम हिरोडूट्स, जिस ने १०६ वर्ष की उम्र पाई अपनी लम्बी उम्र का भेद शहद को रात दिन रोजाना नियमित प्रयोग को बताते हैं। सैकड़ों वर्ष ईसा पूर्व से ही मिस्र में शहद का दवा और आहार के रूप में प्रयोग का पता चलता है। १६५३ में एक फ़िरऔन के मक़बरे की खुदाई पर लाश में ताबूत के निकट शहद से भरा हुआ एक मिट्टी का घड़ा पाया गया जो कई हज़ार वर्ष पहले फिरऔन की लाश के साथ मक़बरे में रख दिया गया था। इस शहद का रासायनिक विश्लेषण करने के बाद पता चला कि कई हज़ार वर्ष पुराना होने के बावजूद शहद बिल्कुल सही हालत में प्रयोग के योग्य था, केवल इसका रंग बदल गया था। मिस्र के प्राचीन इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि मिस्र के निवासी शहद का प्रयेग करने के लिए मक्खियां पालते थे और नील नदी की घाटी में रंग बिरंग के खुशबूदार फूलों की खेती करते थे ताकि उनकी मक्खियों को शहद की खोज में दूर न जाना पड़े और शहद जल्द इकट्ठा हो जाए।

प्राचीन यूनानी चिकित्सक पेट की सभी बीमारियों का इलाज ऐसी दवा से करते थे जिसमें शहद मुख्य अंश रहा करता था। इसके अतिरिक्त थकन और ताक़त की कमी दूर करने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता था। शहद का रासायनिक विश्लेषण करने पर इसमें तांबा, चूना, पोटेशियम, सोडियम पाए गये। इन खनिजों के अतिरिक्त शहद में विटामिन सी, ई और बी की भी शुद्ध मात्रा पाई जाती है। विशेषज्ञों की राय के अनुसार खजूर सब से अधिक ताक़त देने वाला आहार है। इसके बाद दूसरे नम्बर पर शहद आता है लेकिन दूध की तुलना में शहद छः गुना अधिक शक्ति प्रदान करने वाला है। शहद, चिकित्सा के दृष्टिकोण से भी बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है। यह इंसान के शरीर में ताप बढ़ाकर रकत संचार तेज करने में सहायक होता है और ख़ून को साफ़ करता है।

अमरीका के लोरेडो एग्रीकल्चर कालेज में विभिन्न बीमारियों के कीटाणुओं पर शहद को आज़मा कर देखा गया। इन प्रयोगों के परिणाम स्वरूप सिद्ध हुआ कि टाईफ़ाइड के कीटाणु शहद के अन्दर अड़तालिस घंट में हलाक हो गये, दमा के कीटाणु चार दिन में और पेचिस के कीटाणु केवल दस घंटे में मर गये। आज कल दिल की बीमारियों के उपचार के सिलसिले में भी शहद को अधिक से अधिक दवा और आहार के रूप में प्रयोग किया जाता है क्योंकि यह दिल की धड़कन को स्थिर रखता है और उसको मन्द गति से रोकता है। डा० जी०एन० डब्लू थामस कहते हैं कि शहद दमा, आंतों की सूजन, बुखार, दिल और जिगर के लिए लाभकारी है। गुरदों के कार्य में शक्ति प्रदान करता है और आंखों की रोशनी को तेज़ करता है, घाव को जल्द भरता है और इन सब खूबियों के अतिरिक्त शराब की बुरीलत को छुड़ाने में भी लाभदायक सिद्ध हुआ है।

मुहसिने इंसानियत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि शहद हर बीमारी की दवा है और हर रोग का उपचार है। इसकी खूबियों को देखते हुए हर घर में दवा और आहार के रूप में इसका प्रयोग और मौजूदगी आवश्यक है।

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street,
Akbari Gate, Lucknow.

सुन्दर रहन सहन

(बच्चियों की तालीम व तर्बियत)

(छठवीं क़िस्त)

ख़ैरुन्निसा 'बेहतर'

ख़ानादारी के लिए ज़रूरी सामान :

अब तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि घरदारी में सबसे ज़रूरी बातें कौन हैं, किन किन चीजों की रोज़ और किन चीज़ों की महीने में ज़रूरत होती है, कौन सी चीज़ें समय समय मौजूद रहना जरूरी हैं और हर समय के लिए क्या क्या मौजूद रहना चाहिए। यह तो ज़रूर है कि करने से तुम्हें सब मालूम हो जायेगा मगर बदनाम हो के। तुम्हारी बदनामी से पहले अभी कहना ज़रूरी है कि कितना रूपया किन ज़रूरतों में खर्च होता है, कौन से काम ज़रूरी हैं कौन से फ़ुजूल।

घर में अलावा और चीज़ों के चार पाइयां बहुत ज़रूरी हैं इन की कमी से सख़्त तकलीफ होती है, वक़्त पर मांगना पड़ता है। स्वयं को लज्जित होना पड़ता है दूसरों को नागवार गुज़रता है। यह ज़रूरी नहीं कि मसहरियां हों या नेवाड़ के पलंग हों बान्ध के हों मोटे हों या बारीक किसी तरह के भी हों ज़रूरत से ज़ियादा हों, ऐसा न हो कि मेहमानों को ज़मीन पर लेटाओ, या खुद ज़मीन पर लेटो, दोनों बातों में ज़िल्लत है, फिर यह भी समझो कि रूपया उनमें किस क़दर ख़र्च होता है। अगर तुम्हारे घर में चार चारपाइयों की ज़रूरत हो तो कम से कम आठ पलंग मंगवाना चाहिए। इसी तरह हर चीज़ का अन्दाज़ा कर सकती हो, तख़्त चौकी आदि। और ज़रूरत की अन्य चीज़ें जिन के उपलब्ध न होने से सख्त तकलीफ होती है, इनका रहना ज़रूरी है और जिन के न होने से काम नहीं चल सकता।

हर समय काम आने वाली चीज़ें

बर्तन आदि। जितनी बरतने की चीज़ें होती हैं जैसे कढ़ाई, कलछा, दस्तपनाह (चिमटा), तवा, चाकू, कैंची, सरौता, सीखें और चूल्हा, अगर तुम्हों सलीक़ा है तो चूल्हा मिट्टी का और सीखें बांस की बना सकती हो, मगर और चीज़ें ऐसी हैं कि उनके लिए दूसरी सूरत तुम से नहीं हो सकती। बिना चाकू, छुरी, कैंची, सरौता के काम हरगिज़ बन नहीं सकता, दूसरी सूरतों से अगर काम निकाल लोगी तो दुरुस्त न होगा। इसी तरह सूप, छलनी बारीक व मोटी, दालछलना, दौरी, डलियां, पूने बारीक व मोटे, झाब, ख्वानपोश, दस्तर ख़्वान बड़े और छोटे कम से कम दो ज़रूर हों।

बर्तनों की तादाद

ख्वान लकड़ी के या सीनियां छोटी भी बड़ी भी। बर्तन आवश्यकतानुसार बल्कि आवश्यकता से अधिक हों। यह सब ज़रूरी हैं। पतीलियां कई अ़दद तांबे और अल्मूनियम की और पतीले दो जरूर हों। चार से पांच किलो तक पकाने को, अगर ख़ुदा ने दिया है तो देग भी ज़रूरी है। कफ़गीरें, कलछे कई अ़दद, एक लकड़ी की डोई खिचड़ा आदि घोटने के लिए, लगनें कम से कम दो, तस्ले चिकने पेन्दी के दो छोटे और बड़े जिन में नान खताइयां, रोटियां, पराठे आसानी से पक सेकं और ऊपर से सरपोश भी ज़रूर हों कि ज़रूरत पड़ने पर दिक़्क़त न हो, यह सामान कलछे और दस्तपनाह के साथ अलग रखो हर समय उनको काम में न लाओ जो चीज़ हर समय काम में रहती है घिस पिट जाती हैं ज़रूरत पड़ने पर दिक्क़त होती है। अगर काम के लिए निकालो तो फौरन साफ़ करके रख दो आज कल पर न छोड़ो। हर चीज़ संभाल के रखो। बर्तन छोटे बड़े प्याले, प्लेटें संख्या में इतनी हों कि बीस पचीस आदमी एक समय में खा सकें। मांगने की ज़रूरत न पड़े। चीनी और तामचीनी के अलावा रोज़ाना बरतने के लिए तांबे के बर्तन में कलई बहुत जरूरी है। हफ़्ता के बाद शायद इस क़ाबिल न रह सकें कि उन में पका कर रखा जाये। ज़रा भी कलई कम हो जाती है तो खाना रखने से बदमज़ा हो जाता है। मगर तांबे के बर्तन पायदार होते हैं टिकाऊ होते हैं। और उनको नुकसान नहीं पहुंचता, जब चाहो बदलवा लो। बर्तन बिना नाम के न रखो, बहुत जल्द खो जाते हैं। बिना निशान के तुम अपना नहीं बता सकतीं। जब बर्तन मंगाओ निशान बना लो। चीनी आदि के बर्तनों के साथ चमचे अलग अलग अनेक प्रकार के मौजूद रखो, चाय के

सेट के साथ भी चमचे आवश्यकतानुसार रखो। समावर पानी गरम करने की छोटी टंकी केतली आदि सब एक जगह रखो, कोयले की भी व्यवस्था रहे।

जिन्स (अनाज) रखने की जगह

कोठरी की भी देखभाल रहे कि अगर साल भर की जिन्स रखना हो तो बखारी जो देहातों में बनती हैं वह बनवा रखो। इन में अनाज फसल पर भर दिया जाये और इनसे हर महीने निकाल कर पीपों और मटकों में भर लो, कुल रोज की ज़रूरी चीज़ें उनमें भरी रहें और जो चीज़ जहां भरो वहां उसका नाम लिख दो जैसे दाल, चावल, आटा, मसाला आदि और हर चीज़ पर लेबिल लगा दो कि समय पर आसानी से मिल जाये।

अन्य आवश्यक चीज़ें

बांट, तराजू, छोटे बड़े तैयार रहें। जो चीज़ लो या किसी को कर्ज़ दो उसे तौल कर दो। लेन देन में सावधानी बरतो कि खुदा के यहां पकड़ न हो। इसकी बड़ी ताकीद है। डली, तम्बाबू भी तौल कर दो। ईमान बड़ी चीज़ है। तमाम ज़रूरी चीज़ें एक ही बार महीना या हफ़्ता में मंगा लो। थोड़ी मंगाने में बरकत नहीं होती लकड़ी, घी, तेल, मसाला, कत्था, चूना, डली, तम्बाकू यह बहुत ज़रूरी हैं। इनके न होने से तकलीफ भी होती है और बदनामी भी । घर में चिराग़ की बहुत ज़रूरत है। लालटेन डिबिया इतनी रखो कि हर मौके पर काम देसकें। डयोढ़ी पर भी एक डिबिया ज़लाओ कि अन्धेरे में कोई ठोकर खाकर गिर न जाये। और बदनामी तुम्हारी हो। कोठरी का इन्तिज़ाम अपने हाथ में रखो। खुद बैठकर तुलवाओ। जो चीज़ें दो अपने हाथ से दो। हर चीज़ की देख भाल करती रहो। किसी पर न छोड़ो। निश्चित होकर न बैठो। जो चीज़ मंगाओ उसका भाव दूसरों से मालूम कर लो। अगरचे पैसों की ही क्यों न हो। अगर तुम जांच न करोगी तो तुम्हें मूर्ख समझकर लोग खूब लूटेंगे।

जिन्स की तादाद

पहले तुम अपने घर के आदमियों को देख लो। अगर घर में चार खाने वाले हैं और एक मामा तो जिन्स की तादाद यह रखे :

गेहूं ७५ किलो०, चावल ३७ किलो दाल १४ किलो।

मसाला : धनियां दो किलो, मिर्च लाल ५०० ग्राम, नमक तीन किलो, हल्दी २५०ग्राम, प्याज पांच कलो, लहसुन दो किलो, अदरक १२५ ग्राम, खटाई ५०० ग्राम, ज़ीरा सफ़ेद ६० ग्राम, जीरा काला ६० ग्राम, काली इलायची ६० ग्राम, लौंग ५० ग्राम, हींग छः ग्राम, मेथी ६० ग्राम, कलौंजी २५० ग्राम, घी पौने तीन किलो, तेल सरसों का पौने तीन किलो, डली पौने तीन किलो, कत्था ७०० ग्राम, तम्बाकू आवश्यकतानुसार, गोश्त इच्छानुसार।

यह हिसाब मैं ने तो बता दिया है लेकिन खर्च अन्दाज़ा करके जितना मंगा सकती हो उतना ही मंगाओ। नक़द खरीदो। कर्ज़ न लो। अगर २५० ग्राम गोश्त बकरी में पूरा न कर सकती हो तो कोइ और तरकारी आदि जो तेल और घी में तैयार हो सकती है और नुकसान भी कुछ नहीं तो मंगा लो। अगर बकरे का गोश्त मंगाना चाहो तो एक वक़्त गोश्त रखो और दूसरे वक़्त ऐसी चीज़ें जो स्वाद बदलने के लिए हों जैसे मूंगछी, रिकौंच, कढ़ी, फुलकी, आदि। अगर इस तरीके से करोगी तो घी इतना बच रहेगा कि कभी महीने में खिचड़ी और पुलाव भी खा सकती हो और खिला सकती हो। गोश्त में तरकारी जरूर शामिल करो जिससे मज़ेदार भी हो और पूरा भी पड़े। तरकारी, पान और ऊपर की ज़रूरतें रोज़ रोज़ की पूरी करती रहो। (जारी)

प्रस्तुति तथा अनुवाद : मो० हसन अंसारी

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का ज़िक्र

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा हमारे हुजूर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बड़ी चहीती बीवी थीं। वह हम सब मुसलमानों की मां थीं। वह इतनी बड़ी आलिम थीं कि बड़े बड़े सहाबा उन से मसअले पूछा करते थे। एक बार हमारे हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी सहाबी ने पूछा कि आप को सबसे ज़ियादा महब्बत किस से है ? फ़रमाया आइशा से। पूछा मर्दों में ? फ़रमाया उनके बाप हज़रत अबू बक्र से। (रज़ियल्लाहु अन्हु) देखो यह औरत थीं जिनसे बड़े बड़े आलिम दीन की बातें पूछते थे। तुम भी दीन इल्म मेहनत से हासिल करो।

बच्चों में निमोनिया

डा० मुहम्मद असलम

बच्चों में सांस, सीने की बीमारियां अत्यधिक घातक हो सकती हैं। संसार में हर साल चालीस लाख बच्चे इस प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त होकर अपनी जान से गुज़र जाते हैं। जिनकी अक्सरीयत का संबन्ध निर्धन ऐशियाई उन्नतिशील दुन्या से है। उनमें ७५ प्रतिशत मरीज़ निमोनिया के होते हैं।

निमोनिया अधिकतर कीटाणुओं से होता है। जिसका इलाज एंटीबाइटिक दवाओं से हो सकता है। यदि समय पर इस बीमारी की पहचान हो जाये तो बहुत से मरीज़ मौत के मुंह से बच सकते हैं। यह बात याद रखने की है कि इस रोग की पहचान के लिए खून की जांच, एक्सरे और सीने के आले की जांच आवश्यक नहीं बल्कि होशियार मां बाप इस रोग को पहचान सकते हैं बशर्ते कि वह इस रोग की प्रारम्भिक जानकारी रखते हों। जैसे सांस लेने की गति तेज़ हो जाती है, उसके अतिरिक्त पस्लियों के बीच मांसपेशियां खिंची हुई मालूम होती हैं जो सांस को अन्दर लेने की कोशिश है क्योंकि इस बीमारी से ग्रस्त फेफड़े में सांस कठिनाई से जाती है और पसलियां नीचे ऊपर होती हैं। उपरोक्त दोनों दशाओं को देखकर मां या कोई भी स्वास्थ कर्मचारी यह अनुमान लगा सकता है कि बच्चे को निमूनिया है और फिर उसी समय इलाज शुरू किया जा सकता है। यदि इस जानकारी को आम (सार्वजनिक) किया जाए और इस रोग के उपचार के लिए एक सस्ती दवा उपलब्ध हो सके तो इस बीमारी का सफल इलाज हो सकेगा।

यह बात दिलचस्पी से पढ़ी जाएगी कि विकासशील देशों के जिन स्थानों पर जनसाधारण में स्वास्थ की जानकारी, बच्चों की देख रेख में बेहतरी और बीमारियों के रोकने में टीकों का प्रबन्ध किया गया है, वहां बच्चों का स्वास्थ प्रत्यक्ष रूप से अच्छा रहा और उनकी मृत्युदर में काफी कमी आ गई। आवश्यकता है कि इस कार्यक्रम को हर जगह चलाया जाए।

जानकारी के लिए बच्चों की स्वाभाविक (**Normal**) सांस की रफ़्तार अंकित की जा रही है–

२ माह से कम उम्र के बच्चों में ६० सांस प्रति मिनट

२ माह से बारह माह के बच्चों में ५० सांस प्रति मिनट

एक वर्ष से अधिक उम्र के बच्चों में ४० सांस प्रति मिनट

जिन बच्चों में अपनी उम्र के अनुसार सांस की गति अधिक है उन्हें सम्भवतः निमोनिया है और उन्हें इलाज की आवश्यकता है। कभी कभी बीमारी की गम्भीरता के अनुसार हस्पताल में दाखिल करके उपचार की आवश्यकता पड़ सकती है। दो माह से कम उम्र के बच्चों में निमोनिया का दौरा गम्भीर और बहुदा घातक हो सकता है। अतः इन बच्चों में तत्परता से इलाज की ज़रूरत होती है।

जिन बच्चों को केवल नज़ला ज़ुकाम या खांसी होती है उन्हें एन्टी बाइटिक दवाओं की आवश्यकता नहीं होती है। उन्हें केवल सामान्य आहार और कम गर्म पेय पदार्थ दें ताकि गले को आराम मिले लेकिन साथ–साथ यह देखते रहें कि निमोनिया का लक्षण तो नहीं दिखाई दे रहा है। चुनानचः छोटे बच्चों में सांस की रफ़्तार को महत्व दिया जाए। अगर वह बीमार हों तो सांस की नियमित रूप से गिनती की जाए और जब सांस अधिक गति से चलती हो तो फिर तुरंत डाक्टर की सलाह ली जाए।

बच्चों की फुंसियां

कभी कभी नीम की पत्तियां उबाल कर उसके पानी से नहला दें। बरसाती फुंसियों के लिए आम की गुठली की गिरी पानी में पीस कर लगाएं। एक लाभदायक मरहम इस प्रकार बनाएं। दस ग्राम उन्नाब चालीस ग्राम गाय या भैंस के घी में जला कर खूब घोट लें फिर उसमें दो ग्राम धोया हुआ तूतिया मिला कर फुंसियों पर लगाएं। ज़ख्म जल्द भर जाएंगे।

तूतिया बारीक पीस कर साफ़ पानी में डालें फिर आहिस्ता आहिस्ता पानी गिरा दें नीचे बैठे हुए तूतिया में इसी प्रकार तीन बार पानी डाल कर गिराएं फिर तूतिया सुखा लें, यही धुला तूतिया है।

समाज सुधार

इस्लाम में सदाचरण

मु० ज़फ़ीरुद्दीन मिफ़्ताही

बूढ़ों की इज़्ज़त करना भी आचरण का एक उल्लेखनीय पहलू है जिसको आजकल भुला दिया गया है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया है कि तुम अपने बूढ़ों की इज्ज़त करो ताकि तुम्हारे छोटे तुम्हारी इज़्ज़त करें। आप सल्ल० ने फ़रमाया :

'रब की बड़ाई मानने में यह भी एक महत्वपूर्ण बात है कि सफ़ेद बाल वाले को सम्मान दिया जाये, विद्वानों को आदर और न्याय प्रिय राजा को श्रद्धा दीजाये।'

अब तो हमारे इस ज़माने में बूढ़ों का मज़ाक़ उड़या जाता है, और उनको चिढ़ाने की कोशिश की जाती है, अदब व एहतराम मान–सम्मान तो दूर की बात है, कोई उनको चैन से भी नहीं रहने देता, बल्कि आधुनिक विचार धारा और रौशन ख़याल तबकः में कुछ की सोच यह है कि बूढ़े देश पर बोझ होते हैं, उनको जीने का हक़ नहीं। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने फरमाया :

'कोई जवान किसी बूढ़े की उस के बुढ़ापे के कारण जब इज़्ज़त करता है तो अल्लाह उस जवान की बुढ़ापे में इज़्ज़त का सामान पैदा कर देता है।'

आप सल्ल० ने बताया है कि जिन का अखलाक़ अच्छा है वे रात जागकर इबादत करने वालों और रोज़ा रखने वालों जैसा सवाब (पुण्य) हासिल करते रहते हैं। एक दफ़ा आप सल्ल० ने बताया :–

'मुसलमानों में भरपूर ईमान वाले वह लोग हैं जिनके अखलाक़ (आचरण) सब से अच्छे हैं और जो अपने बाल बच्चों पर सबसे ज़ियादा मेहरबान हैं।

आप सल्ल० ने हज़रत मआज़ रजी० को जब यमन भेजा तो आख़िरी नसीहत जो आप ने फ़रमाई वह यह थी :–

'लोगों के साथ अच्छे अखलाक़ (सदाचरण) से पेश आना।'

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने एक समय में फ़रमाया :–

जिसे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत किया है कि :

बद गुमानी (किसी के विषय में बुरा विचार) से बचो। बद गुमानी सब से झूटी बात है। किसी की (बुराइयों की) टोह में न रहो। किसी की (भेद की) बात न सुनो। परस्पर (अपने भाई से) बढ़ जाने की कोशिश न करो। (इस प्रकार कि अपने भाई को पीछे ढकेल कर या उसे हानि पहुंचा कर आगे बढ़ जाओ यह बुरा है।) एक दूसरे पर हसद (डाह, जलन) न करो। एक दूसरे पर गुस्सा न करो। (अर्थात नर्मी बरतो) और न एक दूसरे को छोड़ दो। (अर्थात परस्पर मेल रखो) और अल्लाह के बन्दे भाई भाई हो जाओ। (मुस्लिम)

यह भी आचरण के विरुद्ध है कि किसी की मौत पर खुशी मनाई जाये। किसी की तबाही व बर्बादी का प्रयास किया जाये या किसी को अपमानित व लज्जित किया जाये।

आप सल्ल० ने फरमाया :–

'अपने मुसलमान भाई की मुसीबत पर खुशी न मनाओ कि अल्लाह उस दुखी को क्षमा कर दे और तुम को मुसीबत में डाल दे। आज कल एक बीमारी यह भी पैदा हो गई है कि पति–पत्नी के सम्बन्धों के सिलसिले में जो पर्दे की बातें हैं उनको अपने दोस्तों में गर्व के साथ बयान करते हैं। यह भी आचरण की गिरावट है। हमारे नबी सल्ल० ने इस प्रकार की बात से सख़्ती के साथ रोका है। आप सल्ल० ने फ़रमाया :–

'क़ियामत के दिन अल्लाह के नज़दीक बदतरीन (निकृष्ट) आदमी वह होगा जो आपस में पति पत्नियों में दाम्पत्य सम्बन्ध बरतता है और फिर इस पर्दे की बात को प्रकाशित करता है।'

अमानत में ख़ियानत करना, वअ़दा खिलाफ़ी करना और इस तरह की दूसरी बुराइयां दुन्या में आम होती जा रही हैं और इन तमाम बुराइयों को राजनीति के नाम पर रात दिन लोग खुले आम करते हैं। यद्यपि यह सब आचरण के विपरीत हैं और इस्लाम ने बड़ी सख़्ती के साथ इन से रोका है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया :–

''मुनाफ़िक़ के तीन लक्षण है –

बात करे तो झूठ बोले, वअ़दा करे तो पूरा न करे और जब उसके पास अमानत रखी जाये तो ख़ियानत पर तुल जाये, चाहे वह नमाज़ रोज़ा

क्यों न अदा करता हो और अपने को पक्का मुसलमान क्यों न समझता हो।"

दुन्या में दुराचरण की महामारी फूट पड़ी है। अनगिनत बीमारियां फैल रही हैं मगर कोई जिम्मेदार नहीं जो इनको रोके। मुसलमानों को सोचना चाहिए कि अरब से मुट्ठी भर मुसलमान उठे और सारी दुन्या में फैल गये। उनके पास कौन सी शक्ति थी जिसने हर जगह मुसलमानों के पैर जमा दिये। कहने को जिसके जी में जो आये, कहे, मगर सच्ची बात यह है कि उनके पास 'सदाचरण' की सबसे बड़ी दौलत थी जिसने उनको ऊंचा उठाया। उनके पास दुन्या से बढ़कर दौलत थी न सारे इन्सानों से ज़ियादा ज्ञान व कौशल था और न तमाम धर्मों और समुदायों से संख्या में यह अधिक थे।

इस्लाम गर्दन काटने वाली तलवार से नहीं फैला। यह तो दुश्मनों का सबसे अधिक कराहियत पैदा करने वाला बोदा प्रोपेगन्डा है। वास्तव में इस्लाम का प्रसार सत्य और सदाचरण का नतीजा है। अन्यथा दुन्या के विख्यात साहसी बादशाहों का झुक जाना, दुन्या की सबसे बड़ी ताकत का हथियार डाल देना और दुन्या के चप्पे चप्पे पर इस्लाम और मुसलमानों की हुकूमत का क़ाइम हो जाना इतने कम समय में सम्भव न होता।

इतिहास साक्षी है कि जैसे जैसे मुसलमानों के आमाल (कर्म) व अख़लाक़ गिरते गये, उनमें कमज़ोरियां और बुराइयां आती गईं वैसे किताब व सुन्नत पर अमल कम होता गया और इस्लाम का प्रसार बन्द होता चला गया।

जिस धर्म की शिक्षा यह हो कि किसी नेकी को तुच्छ न जानो चाहे तुम को अपने भाई से सहर्ष मिलना ही क्यों न हो अर्थात खुशी खुशी मिलना भी बड़ी नेकी है, जिस धर्म के पैग़म्बर सल्ल० का एलान हो कि कुछ न हो तो पाकीज़ा बात ही सही सुवाल करने वाले के साथ शिष्टाचार कर दो, उस दीन व धर्म के दिये हुए सदाचरण का कौन अन्दाज़ा लगा सकता है ?

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया, " जहां रहो अल्लाह से डरते रहो, बुराई का जवाब नेकी से दो ताकि बुराई मिट जाये और लोगों के साथ सद्आचरण करो।

दुन्या आश्चर्य में होगी कि बुराई करने वाले के साथ नेकी ? विचित्र बात है। मगर कैसे विश्वास दिलाया जाये कि बुराई बुराई से ख़त्म नहीं होती, बुराई का खातिमा नेकी ही से सम्भव है जिस तरह आग को बुझाने के लिए पानी की ज़रूरत पड़ती है उसी तरह बुराइयों को मिटाने के लिए नेकियां करनी होती हैं।

आप सल्ल० ने फ़रमाया, " यह क्या हुआ कि नेकी करने वालों के साथ नेकी की और बुराई करने वालों के साथ बुराई, कमाल यह है कि तुम को अपने मन पर ऐसा नियन्त्रण हो कि एहसान करने वालों के साथ एहसान का बर्ताव तो आवश्य करो लेकिन कोई अगर बुराई से पेश आये तो उस समय भी तुम ज़ुल्म पर न उतरो बल्कि बुराई का नेकी से जवाब दो।"

एक व्यक्ति हज़रत मुहम्मद सल्ल० की सेवा में उपस्थित होकर कहने लगा, 'ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! मेरे परिवार जन और रिश्तेदार हैं मैं उनके साथ सिल–ए–रहिमी (अपने परिवार वालों से प्रेम रखना और यथाशक्ति उनकी सहायता करना) करता हूं, वह मुझ से बेगान्गी बरतते हैं, मैं उन लोगों के साथ नेकी करता हूं और वह मुझ से बुराई के साथ पेश आते हैं, मैं उन के साथ सब्र और धैर्य का मामला करता हूं और वह मुझ से नासमझी व नादानी की बातें करते हैं।' यह हाल सुनकर आप सल्ल० ने फरमाया 'अगर तुम वही करते हो जो तुमने कहा तो तुम उन सब को गरम राख खिलाते हो। अर्थात तुम्हारे रिश्तेदार अपनी बेवफाई (दग़ाबाज़ी) से गुनाह का बोझ उठाते हैं और तुम नेकी करके अपनी सलामती का सबूत पेश करते हो।

इस्लाम ने सदाचरण को बड़ा महत्व दिया है और अपने अनुयाइयों को अच्छा कर्म व अच्छे आचरण की सख़्त ताकीद की है। आज दुन्या में दौलत, ज्ञान, बुद्धि, ताक़त किसी चीज़ की कमी नहीं है। हां, अगर कमी है तो सत्कर्म और सदाचरण, पावन व पवित्र व्यवहार और सच्ची इन्सानियत की। क्या ही अच्छा होता कि मुसलमान इस सिलसिले में दुन्या की व्यवहारिक अगुवाई करके अपना हक़ अदा करने का प्रयास करते।

प्रस्तुति तथा अनुवाद : मो० हसन अंसारी

> और (सुनो) भलाई और बुराई बराबर नहीं हो सकती। आप (किसी की सख़्त कलामी या बुराई का हिकमत से) अच्छा जवाब दें तो आप देखेंगे कि जिस से आप की दुश्मनी थी जैसे वह गहरा दोस्त हो गया। (पवित्र कुर्आन ४१:३४)

कुर्रान मजीद की समता, संतुलन तथा उसके परिणाम

मौ० मुहमदुल हसनी

(बेशक यह कुर्आन हिदायत देता है उस रास्ते की तरफ़ जो बिल्कुल सीधा है।) इस आयत में अल्लाह ने उस राहे हिदायत और एतिदाल (समता) की तरफ मार्ग दर्शन किया है। जिस के बिना सही लक्ष्य तक पहुंचना सम्भव नहीं है। इस कुर्आनी घोषणा (एलान) तथा चैलेंज/चुनौती के प्रकाश में अब इस्लाम के चमतकारी विधान पर नज़र डालिये तो कुर्आन की बड़ाई से सारे परदे, सारा अंधेरा छट जाएगा– "अक़वम" का अर्थ है कि सबसे सीधा तथा सन्तुलित। कुर्आन में एक स्थान पर आया है कि –

(बेशक हमने इन्सान को जन्म दिया अच्छे अन्दाज़े अनुमानित तथा अनुपात के साथ) (सूरतुत्तीन) हुस्नों खूबी वास्तव में तनासुब "सन्तुलन" का नाम है। कविता की सारी अच्छाई उसकी पंक्तियों की मौजूनियत के कारण है और यही नियम सारे विश्व में है। इस का भली प्रकार मुशाहिदा किया जा सकता है, लेकिन कुर्आन की राहे हिदायत और समता के मार्ग की अच्छाई उन तमाम जाहिरी अच्छाइयों से कहीं अधिक है। इस में न तो कोई चीज अधिक है और न कम।।

वह अन्दाज़ा है अ़ज़ीज़ व अ़लीम (रब) का (यासीन)

यह आयत एक ऐसा प्रकाश है। जिसमें जीवन की राहों में जितना चलेगा आगे बढ़ेगा इस्लाम की सच्चाई और उसकी वास्तविकता खुलती जाएगी। पूजा पाठ, व्यवहार, अधिकार, त्यौहार, राजनीति गरज़ निजी जीवन को या सामूहिक और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हज़ारों, लाखों समस्याएं आप के सामने आएंगी। लेकिन यह बात हर चीज में नुमायां नज़र आएगी। इस बात को समझने के लिए केवल एक चीज़ को ले लीजिए तो आप को पूरी बात भली प्रकार समझ में आएगी।

खाना मनुष्य की एक आवश्यकता है जिससे किसी को छुटकारा नहीं मिल सकता। बड़े से बड़ा रिशी मुनी पूजा पाठ करने वाले हों या केवल दुन्या का चाहने वाला खाने की दोनों को आवश्यकता है। लेकिन खाने का संतुलन वास्तव में क्या होना चाहिए और उसकी सही मात्रा क्या होनी चाहिए और उसका सही तनासुब और एतिदाल का रास्ता हो जिसके लिए कुर्आन ने अकवम का शब्द प्रयोग किया है इसको हुजूर की इस हदीस की रौशनी में देखिए और समझिए।

आपने इरशाद फ़र्माया कि आदम ने अपने पेट से अधिक बुरे बर्तन को नहीं भरा।

कमर सीधी रखने के लिए दो लुक़मे (निवाले) काफ़ी हैं लेकिन उससे संतोष न हो तो एक, तिहाई हिस्सा भोजन के लिए रखें और एक तिहाई पीने के लिए और एक तिहाई सांस के लिए छोड़ दें यानी मुंह तक पेट को न भरें। (तिर्मिज़ी)

देखिए संयम और मनुष्य की मूल आवश्यकताओं को इस नियम में किस खूबसूरती और संतुलन के साथ जमा किया है।

अक़ीदए तौहीद (अल्लाह के एक होने का विश्वास)

"वह अल्लाह जिसने तुम्हें जन्म दिया फिर तुम को रिज़्क अन्न दिया फिर तुमको मारेगा और फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा क्या इनमें से कोई है जिनको तुम उसका साझेदार ठहराते हो इनमें से कोई एक काम भी कर सकता हो। पवित्र है वह और बुलंद व बरतर है उनके शिर्क से।"

यह सूरह रूम की आयत है इस में अल्लाह ने ईमानियात के बारे में एक महत्वपूर्ण पहलू के बारे में बतलाया है और मनुष्य की सही प्रकृति को बताया है। इसमें चार वस्तुओं को आधार बनाया है।

(१) जन्म यानी मनुष्य संसार में नहीं था जन्म देकर उसको प्रकट किया। (२) उसके लिए अन्न और रोज़ी का प्रबन्ध किया। (३) मरना और (४) मरकर फिर ज़िन्दा होना उसके बाद अल्लाह ने कहा कि अल्लाह वह है जिसके अधिकार में यह चारों चीज़ें हैं। अब तुम ही बताओ कि उन माबूदों के हाथ में क्या है जिनको तुम पूजते हो क्या कोई भी इन चारों चीज़ों पर शक्तिमान है कदापि नहीं।

अल्लाह ने साफ़–साफ़ बता दिया कि जिन लोगों ने शैतान के बहकावे में आकर शिर्क किया वह क्षमा न पाएंगे। वह जहन्नम में जलेंगे।

ताक़त समस्या का हल नहीं है

ये बात बारहा तजुर्बे में आ चुकी है कि किसी मसअले (समस्या) के पुरअमन हल के लिए केवल ताकत और हुकूमत ही एक मात्र ज़रिया नहीं हुआ करता है लेकिन आज वही ग़लती फिर दोहराई जा रही है--ताकत के बल पर किसी मसअले को वक्ती तौर पर दबाया तो जा सकता है लेकिन ये उसका पायदार हल नहीं हो सकता आज दुन्या भर में जो मसाइल (समस्याएं) पैदा हो चुकी हैं उनमें मज़ीद शिद्दत आती जा रही है इसका एक सबब ये भी है कि इनके हल के लिये सन्जीदगी (गम्भीरता) और इन्साफ पसन्दी के बजाए ताकत के बल पर दबाने और कुचलने का मुकाबला सा चल पड़ा है जिसकी वजह से मसअला सुलझने के बजाए उलझ जाता है माज़ी में भी ये ग़लतियां की गयीं और आज भी की जा रही हैं। जबरदस्त ताकत के प्रयोग से लाखों इन्सों को ज़ब्ह किया गया ऐसा लगा कि मसअला हल हो गया लेकिन हुआ उसका उल्टा न तब समस्या हल हुई न आज हल होती नजर आती है– अपने या दूसरों के मसाइल चाहे वह दीनी हों या दुन्याबी, सियासी हों या समाजी किसी की बेचैनी को जब तक हम अपना मसअला समझ कर हल नहीं करेंगे तब तक बात बनने वाली नहीं है किसी क़ौम या फ़िरक़े की नस्लकुशी करके या आर्थिक एतबार से कमर तोड़कर कभी भी अम्नो सुकून काइम नहीं किया जा सकता है। इन्हीं मसाइल से दहशतगर्दी (आतंकवाद) एक अन्तर्राष्ट्रीय मसअला बन गया है और बे सोचे समझे जिसको चाहा उस पर आतंकवादी होने का ठप्पा जड़ दिया । दहशत गर्दी का लफ़्ज़ एक सियासी हथियार बन गया है कभी कभी तो बड़े बड़े दानिशवर (बुद्धिजीवी) भी इस जिहालत के प्रोपगण्डे का शिकार हो जाते हैं अगर कोई सियासी लीडर ऐसा करे तो इतना अफसोस नहीं होता लेकिन जब पढ़ा लिखा संजीदा तबका इन की भाषा बोलने लगता है तो वाक़ओ दुःख होता है– इसका मतलब यह नहीं कि मैं दहशतगर्दी का हामी हूं। दहशत गर्दी जहां भी हो जिस शक्ल में भी हो वह जनता द्वारा हो या सरकारी दहशतगर्दी हो हर एतबार से काबिले नफ़रत है दहशतगर्द बे–ज़मीर है। लेकिन दहशतगर्दी की परिभाषा करनी पड़ेगी उसे रेखांकित करना होगा न कि आज की तरह हर घटना को दहशतगर्दी से जोड़ दिया जाता है फिर उसके जवाब में उससे बड़ी दहशतगर्दी को जाइज़ कर लिया जाता है आज सबसे बड़ी ज़रूरत इस बात की है कि कौमों मज़हबों और मुल्कों के दरमियान हम आहंगी और दोस्ताना सम्बन्ध मानवता की बुन्याद पर काइम किए जाएं साथ ही मक़ामी या इलाक़ाई मसाइल के हल के लिए जो कोशिशें पुरअमन तरीक़े पर की जा रही हैं अनको अपनी समस्या समझ कर इन्साफ से हल करने की कोशिश की जाए। किसी भी मसअले में दोहरा मापदण्ड अपनाना घातक सिद्ध होगा।

इस लिए समस्त संसार से मेरी अपील है कि ताअस्सुब से हट कर समस्याओं का निदान किया जाए ताकि हर देश में खुशहाली हो मानवता सुरक्षित रहे हर व्यक्ति अपने देश और समाज की तरक़्क़ी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए।

कोई जरूरी नहीं कि किसी की कोशिश का हर पहलू हक़ बजानिब हो लेकिन जो चीज़ें वाकई हक बजानिब हैं उनको तस्लीम किया जाए और दोस्ताना माहौल में उनको हल किया जाए भलेही उसमें वक़्ती नुक़सान नजर आए लेकिन आज मसअला तो यह है कि किसी की बात को हक़ीक़त पसन्दी से लेने के बजाए उसकी आवाज़ ही को कुचल दिया जाता है। बद किस्मती से आज हर देश में लोगों की समस्याओं को राजनीति के तराजू में तौला जाता है। इसका सुधार अति आवश्यक है। संसार के बुद्धिजीवियों से अनुरोध है कि वह इस ओर ध्यान दें।

सख़्ती नहीं नर्मी

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि एक दीहाती ने अपनी ना समझी से मस्जिद में पेशाब कर दिया लोग उस पर बिगड़ने लगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उसको छोड़ दो और उसके पेशाब पर एक बड़ा डोल पानी का बहा दो। तुम सख़्ती के लिए नहीं भेजे गये हो (बल्कि) इस लिए भेजे गये हो कि आसानी पैदा करो।

उपदेश को खुदा के भुलाया न कीजिए

हैदर अ़ली नदवी

या तो ये वाक़िआत सुनाया न कीजिए
या अन्जुमन में हम को बुलाया न कीजिए

लम्हों में चलने लगती हैं नफ़रत की आंधियां
अफवाह कोई सुनके उड़ाया न कीजिए।

इक मशवरा संसार को देता हूँ प्यार से
नाहक़ किसी का खून बहाया न कीजिए

रिश्वत के कारोबार से दुन्या तबाह है
रिश्वत का कारोबार चलाया न कीजिए

खुश्बू न दे सकेंगे ये कागज के फूल हैं
बेहतर है इनको घर में सजाया न कीजिए

मांगे कोई दहेज ना लड़की के बाप से
इस पाप का खयाल भी लाया न कीजिए

माता पिता ने पाला है हर कष्ट झेल कर
है पाप दुल्हनों को जलाया न कीजिए

लड़की का प्यार उसको दें दिल खोल कर सभी
बहुओं को नौकरानी बनाया न कीजिए

देकर गए संदेश यह दुन्या को मुस्तफा (स०)
औरत पे कोई जुल्म अब ढाया न कीजिए

जीवन का एक पहिया ये नारी है ऐ हैदर
उपदेश को खुदा के भुलाया न कीजिए

कठिन शब्दों के अर्थ :

इफ़लास – ग़रीबी, कनीज़–दासी, बान्दी, नीलफ़ाम – नीला, इज़्नेआ़म – आ़म इजाज़त, महरम–क़रीबी रिश्तेदार, हैदर – हज़रत अ़ली (रज़ि०), नब्वी सुफ़्फ़ा – हुजूर (स०) की मस्जिद का वह चबूतरा जिस पर कुछ बे घर सहाबा निवास करते थे। हनूज़ – अभी, मुक़द्दम – पहले, सय्यिद–ए–पाक – हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०), मुतहिहर – पवित्र, ख़ैरुलअनाम – सबसे भली सृष्टि अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

माजराए दुख़्तरे ख़ैरुल अनाम

अ़ल्लामा शिब्ली नुअ़मानी

इफ़लास से था सय्यिद–ए–पाक का यह हाल।
घर में कोई कनीज़ न कोई गुलाम था।।

घिस घिस गई थीं हाथ की दोनों हथेलियां।
चक्की के पीसने का जो दिनरात काम था।।

सेने पे मश्क भर के जो लाती थीं बार बार ।
गो नूर से भरा था मगर नील फ़ाम था।।

अट जाता था लिबासे मुबारक गुबार से।
झाड़ू का मश्ग़ला भी जो सुब्हो शाम था।।

आख़िर गई जनाबे रसूले खुदा के पास।
यह भी कुछ इत्तिफ़ाक कि वां इज़्ने आ़म था।।

महरम न थे जो लोग तो कुछ कर सकीं न अ़र्ज़।
वापस गई कि पास हया का मक़ाम था।।

फिर जब गई दोबारा तो पूछा हुजूर ने।
कल किस लिए तुम आई थीं क्या ख़ास काम था।।

ग़ैरत यह थी कि अब भी न कुछ मुंह से कह सकीं।
हैदर ने उनके मुंह से कहा जो पयाम था।।

इर्शाद यह हुआ कि ग़रीबाने हम वतन।
जिनका कि सुफ्फ–ए–नबवी में क़ियाम था।।

मैं उनके बन्दोबस्त से फ़ारिग़ नहीं हनूज़ ।
हर चन्द उसमें ख़ास मुझे एहतिमाम था।।

जो जो मुसीबतें कि अब उनपे गुज़रती हैं।
मैं उन का ज़िम्मेदार हूं मेरा यह काम था।।

कुछ तुम से भी ज़ियादा मुक़द्दम है उनका हक़।
जिन को कि भूक प्यास से सोना हराम था।।

ख़ामोश होके सय्यिद–ए–पाक रह गई।
जुर्अत न कर सकीं कि अदब का मक़ाम था।।

यूं की है अहले बैते मुतहिहर ने ज़िन्दगी।
यह माजराए दुख़्तरे ख़ैरुल अनाम था।।

कुदरत के चमत्कार

हबीबुल्लाह आज़मी

अल्लाह तआला ने सृष्टि की रचना में ऐसे चमत्कार दिखाए हैं कि अक्ल हैरान हो जाती है। ऐसा ही एक चमत्कार उंगलियों के निशानात (Finger Prints) हैं जो हर इंसान में भिन्न होते हैं। दुन्या में मौजूद अरबों की जन संख्या में किसी दो आदमियों के हथेलियों की बनावट एक जैसी नहीं होती और उनके उंगलियों के निशान एक दूसरे से नहीं मिलते। इसीलिए वर्तमान युग में तफ्तीश की दुन्या में फिंगरप्रिंट को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो गया है और मुजरिमों की पहचान फिंगरप्रिंट्स के द्वारा आसानी से की जाती है। न्यायिक प्रक्रिया में भी इस को पूरी मान्यता प्राप्त है। मौक़-ए-वारदात पर पाए जाने वाले उंगलियों के निशानात और मुजरिम की उंगलियों के निशानात एक जैसे होते हैं तो इसी साक्ष्य (शहादत) पर मुजरिम को सज़ा सुना दी जाती है।

फिंगर प्रिंट्स का इतिहास बहुत पुराना है। विशेषज्ञों का विचार है कि चीनियों ने सब से पहले उंगलियों द्वारा हस्ताक्षर करने का तरीक़ा अपनाया। इस प्रकार उंगलियों से इंसान काम लेने लगा। इसके बाद १८५१ तक इस पर काफी अध्ययन हो चुका था। ब्रिटिश वैज्ञानिक सर फ्रेंसिस सरविलयम हरशल और सर एडवर्ड हेनरी फिंगर प्रिंट्स के बारे में काफी जानकारी रखते थे। सर एडवर्ड हेनरी तो फिंगरप्रिंट्स पर एक पुस्तक भी लिख चुके थे।

भारत में भी हाथ देखने का रिवाज बहुत पुराना है। प्राचीन काल में इसका अध्ययन एक विषय के रूप में होता था। लेकिन अपराध की तफ्तीश में इस का प्रयोग पहली बार बंगाल में १८६७ई० में हुआ। यह संसार में अपनी तरह का पहला केस था जब एक क़ातिल को अपनी उंगलियों के निशानात से पहचाना लिया गया। हुआ यह कि एक आदमी हत्या करके दूसरे गांव में चला गया। वहां उसे संदिग्ध हालत में देखकर पुलिस ने पकड़ लिया। पूछ ताछ से ज्ञात हुआ कि यही हत्यारा है परन्तु पुलिस के पास कोई ठोस सबूत नहीं था कि यही क़ातिल है। जब उस की उंगलियों के निशानात (चिन्ह) लाश के पास पाए गए उंगलियों के निशानात से मिलाए गये तो हूबहू एक जैसे निकले जिससे यह साबित हो गया कि यह अस्ली मुजरिम है। अदालत ने इसी सबूत पर उसे फांसी की सज़ा सुना दी।

उस समय बंगाल के इंस्पेक्टर जनरल पुलिस को जो अंग्रेज था, यह तरीक़ा पसंद आया और सरविलियम हरशल, जो उस समय हुगली में नियुक्त था, उन्होंने उसे इस पर शोध करने के लिए राज़ी कर लिया। जब शोध कार्य पूरा हो गया और सारे साक्ष्य पूरे हो गये तो सर विलयम हरशल ने फिंगर प्रिंट्स पर एक पुस्तक लिखी जो इस विषय पर पहली पुस्तक थी। यह पुस्तक बहुत पसन्द की गई और १८६६ में कोलकाता में दुन्या का पहला "फिंगर प्रिंट ब्यूरो स्थापित कर दिया गया। इसके बाद १९०७ई० में स्काट लैण्ड यार्ड ने भी अपना फिंगर प्रिंट ब्यूरो क़ाइम किया।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में फिंगर प्रिंट्स ब्यूरो हर देश के पुलिस विभाग में मौजूद है और क़त्ल, चोरी और डकैती की तफ्तीश में इससे सहायता ली जाती है। जहां कहीं भी ऐसी कोई घटना हो जाती है पुलिस तुरन्त पहुंच कर फिंगर प्रिंट्स लेने की कोशिश करती है और मुजरिम का पता लगा लेती है। हर देश में पुलिस के पास हजारों फाइलें होती हैं जो मुजरिमों तथा सज़ा पाए हुए व्यक्तियों की फिंगर प्रिंट से भरी होती हैं और आवश्यकता पड़ने पर इन से मदद ली जा सकती है।

अमरीका एक ऐसा देश है जो दूसरे देशों से मुजरिमों के फिंगर प्रिंट्स का आदान प्रदान करता है। १९८० में अमरीका के पास लगभग पन्दरह करोड़ फिंगर प्रिंट्स थे अब तो इसकी संख्या और भी बढ़ गई होगी।

हथेलियें तथा उंगलियां की बनावट के इस कुदर्ती चमत्कार ने तफ्तीश की दुन्या को कहां से कहां तक पहुंचा दिया। फिंगरप्रिंट्स अब एक वैज्ञानिक विषय बन गया है। और अपराधों की तफतीश में इस की एक मुख्य भूमिका है।

भरोसे पे उस ज़ाते वाहिद पे तसनीम।
सदा दे रहे हैं दुआ कर रहे हैं।।

गहरे सागर का संसार

मनीष त्रिपाठी

क्या तुम जानते हो कि हमारी पृथ्वी अंतरिक्ष से दिखने वाला एक ऐसा शानदार नीले रंग का गोला है जिसका ७० प्रतिशत क्षेत्रफल पानी से ढका है? इतने विशाल महासागर होते हुए भी आज तक दुन्या के कुल समुद्रों के सिर्फ १ प्रतिशत हिस्से का अध्ययन ही किया जा सका है। तो आओ, कोशिश करते हैं सागरों के कुछ रोचक तथ्य जानने–समझने की :

प्रशान्त महासागर दुन्या का सबसे बड़ा जल क्षेत्र है। यह "ग्यारह करोड़ दस लाख वर्ग किलोमीटर" क्षेत्र में फैला हुआ है और पृथ्वी की सतह से एक तिहाई हिस्से पर इसका विस्तार है।

ज्वारीय लहरें गहरे समुद्रों के भीतर किसी जम्बो जेट से भी तेज रफ्तार से सफर कर सकती है। १९६० में चिली में आए एक भूकम्प से प्रशांत महासागर में जो तरंगे पैदा हुईं वे सिर्फ २१ घंटे बाद जापान पहुंच गईं थीं।

पृथ्वी की सबसे लम्बी पूर्वत श्रृंखला पानी के नीचे है। पूरी दुनिया में समुद्र के बीचों–बीच फैली विशालकाय सबमरीन पर्वत श्रृंखला लगभग पूरी पृथ्वी की ही परिक्रमा किये हुए हैं। इसकी लम्बाई ४६,००० से ७५,००० किलोमीटर के बीच है और यह एंडीज़, रॉकीज़ और हिमालय की सम्मिलित लम्बाई से भी चार गुना ज्यादा लम्बी है।

जापान के तट के पास स्थित मरियाना ट्रैंच विश्व में समुद्र का सबसे गहरा स्थान है और इसकी गहराई १० हजार मीटर से भी अधिक है। अगर इस खाई में माउंट एवरेस्ट को डुबो दिया जाए तो भी जल सतह और उसकी चोटी के बीच १६६६ मीटर का फासला बाकी बचेगा।

पिछले हिमयुग के बाद से हिमखंडों के व्यापक पिघलाव के कारण समुद्र का जल स्तर करीब १६ मीटर बढ़ गया है।

समुद्री सतह पर मौजूद छिद्रों (हाइड्रोथर्मल वैंट्स) से जो गर्म तरल पदार्थ निकलता है उसका तापमान ३५० से ४०० डिग्री सेल्सियस तक होता है जो सीसे को भी पिघला सकता है।

प्रशान्त महासागर स्थित नोवा स्कोशिया द्वीप ज्वार आने से मुड़ जाता है। जब १४ अरब टन समुद्री पानी दिन में दो बार मिनास बेसिन में दाखिल होता है, तो नोवा स्कोश्यिा में देहाती इलाक़ा ज़बर्दस्त बोझ के कारण एक ओर को झुक जाता है। दूसरी ओर दुन्या की सबसे ऊंची ज्वारीय लहरें वुल्फवील बेसिन में उठती हैं। यहां ज्वार के समय पानी की ऊंचाई भाटे के मुकाबले ५२ फुट तक बढ़ जाती है।

हर रोज शाम ढलते ही लाखों स्किव्ड और छोटे –छोटे समुद्री जीव समुद्र की गहराइयों से सीधे सतह की ओर उन छोटे – छोटे पौधों को खाने आते हैं जो सूरज की रोशनी से समुद्र उथले पानी में उगते हैं। सुबह होते ही वे फिर गहराई की तरफ लौटने लगते हैं।

मुट्ठी के आकार का एक स्पंज प्रतिदिन ११०० गैलन पानी साफ कर सकता है। इसलिए इसे समुद्र का वैक्यूम क्लीनर कहते हैं।

समुद्री घास–फूस के रूप में प्रसिद्ध प्लैंक्टन ने हासिल रसायनों वाली सनस्कीन अल्ट्रावॉयलैट किरणों को रोकती है और त्वचा की उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को कुछ हद तक उलट देती है। प्लैंक्टन की एक और महत्वपूर्ण भूमिका है, यह दुनिया की आधी ऑक्सीजन भी पैदा करते हैं।

बास्किंग शार्क प्रति घंटे १८ लाख गैलन पानी (मतलब ओलंपिक आकार के दो स्विमिंग पूलों में मौजूद पानी के समकक्ष मात्रा) छान सकते हैं।

(राष्ट्रीय सहारा)

दुआ

तस्नीम

यही हर दम मेरी तुझ से दुआ है।
बड़ी ही आज़िज़ाना इल्तिजा है।।
गुज़ारूं ज़िन्दगी तेरी रज़ा पर।
न हो तेरी नज़र मेरी ख़ता पर।।
दूमे आख़िर तेरा कल्मा हो जारी।
हो तेरी ही महब्बत दिल पे तारी।।
अज़ाबे क़ब्र से मुझ को बचाना।
इलाही मुझ को दोज़ख से बचाना।।
वह जन्नत नाम है फ़िरदौस जिसका।
वही मेरा ठिकाना हो खुदाया।।
नहीं तस्नीम उस निअ़मत के क़ाबिल
ज़हे किस्मत हो गर रहमत के क़ाबिल

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

मुईद अशरफ़ नदवी

मक्का मुकर्रमा के मस्जिदुल हराम (खान–ए–काबा) के इमाम शैख़ डा० खैय्यात ने दुन्या भर के मुसलमानों को उपदेश दिया है कि मुसीबतों और विपत्तियों में सब्र व दृढ़ता का प्रदर्शन करें। मनगढ़ंत बातों को रिवाज न दें और वास्तविकता की जानकारी प्राप्त करें। जुमा की नमाज़ में हरमशरीफ़ में सम्बोधन करते हुए उन्होंने कहा कि पक्के ईमान वाले ही आज़माईश में पूरे उतरते हैं। मस्जिदे नबवी के इमाम शैख़ अ़ली अल हुजैफ़ी ने कहा कि खुदा का भय हर आफ़त के अवसर पर बेहतरीन हथियार है उन्होंने कहा कि मुसलमान दुआओं में फिलिस्तीन के मज़लूम (नृशंसित) मुसलमानों और इराक़ी भाइयों को भी याद रखें। दुआ करें कि अल्लाह तआला उनके दुख दर्द को दूर कर दे।

वाशिंगटन इराक़ के विरुद्ध फौजी कार्रवाई का अमरीकी अर्थ व्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव होना शुरू हो गया है और अमरीकी अर्थ व्यवस्था को बड़ा धक्का लगा है। श्रम विभाग के अधिकारियों के अनुसार मार्च २००३ में एक लाख आठ हजार कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया गया यद्यपि इस मास बेरोजगारी का प्रतिशत पिछले मास के अस्तर पर ही स्थिर रहा। राष्ट्रपति बुश के शासन में अब तक २१ लाख कर्मचारी अपनी नौकरियों से हाथ धो चुके हैं जब कि निजी विभाग कठिन परेशानियों से गुज़र रहा है। प्राइवेट सेक्टर को ख़तरा है कि युद्ध के कारण टेक्सों में वृद्धि हो सकती है जिससे उनकी आमदनी प्रभावित होगी। अमरीकी सूचना एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार मैनूफैक्चरिंग सेक्टर सबसे अधिक प्रभावित हुआ है जहां मार्च में ३६ हज़ार कर्मचारियों को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा। रिपोर्ट में बताया गया है कि इस विभाग के बेरोज़गार शिल्पकारों की संख्या ३० लाख से बढ़ गई है। रिपोर्ट के अनुसार सेवा विभाग में मार्च के महीने में ६४ हजार पद समाप्त कर दिये गये हैं जबकि इस विभाग में पहले ही २ लाख ५६ हजार बेरोज़गार मौजूद हैं। इराक पर हमले के बाद अमरीका में रेस्टोरेंट्स और बार (शराब खाने) सबसे अधिक प्रभावित हुए और इन को कारोबार में अधिक हानि उठानी पड़ी जबकि सरकारी संस्थान और हवाई कम्पनियां अत्यधिक माली घाटे से गुज़र रही हैं। इसी बीच डेमोकेटिक नेताओं का कहना है कि राष्ट्रपति बुश की आर्थिक पालीसियां पूर्ण रूप से असफल हो चुकी हैं। बीते अट्ठारह हफ़्तों में अमरीका के बेरोज़गारों की कुल संख्या ८४ लाख से भी अधिक हो गई है। अर्थ शास्त्र विशेषज्ञों का कहना है कि इस परिस्थिति में उपभोगताओं का वर्ग प्रभावित होगा। इस परिस्थिति में लगता है कि आने वाले दिनों में यह अव्यवस्था और गम्भीर होगी और यह देश की जीविका के हर क्षेत्र को अपनी लपेट में ले लेगा।

लन्दन (जंग न्यूज़) विभिन्न देशों से प्रकाशित होने वाले अरबी भाषा के समाचार पत्रों ने अपनी समीक्षा में कहा है कि दुन्या भर में अमरीका विरोधी भावनाओं में वृद्धि हो रही है। मिस्र के अलअखबार के अनुसार इस युद्ध के नतीजे में अरब दुन्या और पश्चिम के सम्बन्ध को जो हानि पहुंची है उसकी भरपाई बहुत दिनों तक नहीं हो सकेगी। शाम के समाचार पत्र अलशहूद के अनुसार मित्र राष्ट्र की सेनाओं को अन्तर्राष्ट्रीय अकेला पड़ जाने का भय है जबकि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दुन्या भर में अमरीका विरोधी भावनाओं में वृद्धि हो रही है। अमरीका इंसानियत के भविष्य के लिए आतंकवाद और खतरे का केन्द्र है। मिस्र के समाचार पत्र अलजमहूरिया का कहना है कि अमरीका दुन्या के जनतंत्र और मानवाधिकार का सम्मान करने को कह रहा है लेकिन स्वयं वह उनकी अनदेखी करने को कह रहा है लेकिन स्वयं वह उनकी अनदेखी करने में जुटा हुआ है। संयुक्त अ़रब इमारात के अखबार अलबयान के अनुसार इराक के विरुद्ध युद्ध में पांच लाख से अधिक बच्चे खतरे में हैं और उन्हें मनोवैज्ञानिक सहायता की आवश्यकता है। लन्दन के समाचार पत्र 'अलह्यात' के अनुसार शाम और ईरान को अमरीकी धमकियां दूसरे देशों के विरुद्ध उसकी शक्ति के प्रयोग की इच्छा का प्रदर्शन हैं। सऊदी अरब समाचार पत्र अल जजीरा के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के सम्मान योग्य सदस्यों को चाहिए कि वह इंसानियत को बचाने और पागलपन को रोकने के लिए अग्रसर हों।